

१४ गो
१. डो नम गी वा क वे शाय नम भा

२. नि धन जी म व न नै उभा

आशा मर काथि

262

ASMA ARCHIVES

तममकृत्निमलपनक४षडुजा४युधानकुजाखांस्वाएयुहामातिङ्गितमिम्बवा४मरुवकुमलमनीप्रवल्कल
ववामभयत्पाकवर्धुपनिमरुवकवर्धुलपिनर्तवकुवोतिउमउत्तानेतापमनीर्तनर्तवदनकदल
कस्तार्थगत्यनाएनकभध४कायनिविज्जतुकिकोलधर्मादयाकभ४कात्माङ्गनविध्वदलकमलोपलिविध्व
ह कलिगसहिनातदुजसुदिगमनायथायागर्वेनावनादिसमवर्धुवदिवागस्यापवर्धुनतपनिनिवा
लाखान्मनीकुमलुतविर्वाकुवाकसर्वदिक्कुं कूटागनर्वर्जंवीत्तज्जिगसमत्थरुगवान्वजगल्धमैर
वर्जनय४कूकूमात्र४कूकूसिगसवगनवदन४युधानकुजाखांस्वाएयुहलीगगाअभिमेवन्दिवत्वापध

नानत्वमकूटविचिनुनत्तायाएनलो२नाह४गत्यएवस्थादिभिर्वेशवन४मीनकृष्णकसयगनम
त्व४सिगाएनवकाभिमतिकमलधन४दक्रिलस्यांनलेग४पीगानर्वांमनकटनत्तामिचकुपअधना
भायग्निमायाममिगारनक४नकयअभिमतिवकुधन४उर्लनस्यामभायसिद्धिरुतिग४खभचकु
मलिकमलधन४भायया२मीकृष्णिगसवगनवकु४सर्वगथागनवत्तमकूटिनाविचिनुनत्ताएन
त्त४आएनयात्तावनावेशवनसमा४नेअर्थांमामकिअज्ञात्यसमानकोत्यताभिमतियअधना॥सर्वस
धनप्रगथापा०गु॥वायर्थायालुनाअभिगारसमा॥नेमन्यांतावावत्तसमो०पीगात्यताभिमतियअ

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

[illegible]

अथ वज्रपर्यायं किं न्याः न्यसूर्यष्वच न्यसूर्यगतसर्वविषयज्ञानि न तथा गताः ४ पुष्पाननुजात्यां स्वाहय ह्यलि
 गिता ४ दवा मुखा ह मयार्य कलाधियति मुग्धिनसिमेश्वरजादि न तथा गतमा मकि ४ अथ वज्रानुचक्र
 गतास्तु काधनामकी ४ लावना न्यवजयमानकानां विनावन ४ गन्धवजाया न तं ४ ४ या तु ना न स
 वजयमानकानां ममिगा ४ ला नास्य ४ वज्रयात्रमाद्यसिद्धि ४ धर्मधातुवजाया वज्रधन ४ ४ ला ४ ला ४ ला
 न्या वज्रसुखा ४ ४ वज्रकान् विद्धसि गवत् नीलवक्रसंयतनव कु ४ पुष्पाननुजात्यां स्वाहय ह्यलि किं न्या
 नीलवजाभि मलिकमत्तधा नीविषययज्ञश्च न्यासना वज्रपरा वज्रपर्यायं की न न तमकृटि न त्वा ह न त्वा

(श्री) लमडित ४। ०० रुमेश्वरकृष्णनामसमयसत्त्वसद्वर्गज्ञानसर्वगद्वन्द्वचतुष्टयप्रमृष्टिवत्तुम्भं मंवीजं
 ध्वनन्तं लममिगारामाघसिद्धिप्रज्ञाखानां हृदिविद्रयथायोगावर्त्तसूर्यवाक्त्वं प्रार्द्रां खं हं वावावनादिदृष्ट
 वीनां लं मां पां गां ज ४ हं वं ह ४ वं वं का धानां हं सव्यदवतानां हृदयैव जावत्या मका ४। ०० रुनिष्ठान्नय
 गिन ४ वद्वनायधिष्ठानं हानसत्त्वपुवभादिकंच नाकां । नद न्न त्वाण्यपनिमित्ताचिन्त्यवद्वनहिह्लादिगुन
 ग्रामनमलीयमरुन्निही हृदवताया ४ सकदवसूयविभुहसवीकात्रयचिनिष्ठरुर्महर्महन्नधिभाक्कदा घातु ।
 रुमन्नादिकथनन्तुकलमधिवागनादिष्वययोगार्थयदाहुमध्वज्जन्तुत्वागगाहवगिनायककृत्तामध्व

हिनं रुसुसुननिष्ठगुणमिगारहृत्तायिरवगि, लुक्काधर्मा ४ पुद्वलमि वागीशस्यायुक्तुनल्पकं ४
 ०० कं वद्वमानं वचमलुतेष्वयस्यामलुतेयदवतायामरुत्वातायत्वनमचनं गत्सीनं सर्वपुधानगयाम
 लुते लमहिमस्वीनदालिगिगारहृदहिमस्वावपन्नस्वनगमनागत्तुष्टयकृदागभनवज्जं ह्योदियनिकनिगव
 जपे ४ वनजावकंधर्मादयावतिष्ठय ४ पनिकवा ४ गनवज्जपे ४ रनं वद्वमानानामपिसर्वेषां कृदागभना
 लं गनजावकंधर्मादयावकथाविदवतिवज्जमान ४ त्रय कृदागभना लं दुधर्म ४ सुवन्नपधर्मादयाधर्म
 सत्त्वकर्जगस्यासुवकंतिखनमकं वजावत्या यथावाक्त्वं गथाध्यात्मित्यत्यन्न कुममलुतपुनित्यादना

५

कृत्तनलाकधनाभ्यकुवाउसुचकं वजावतीतिखनं अनियमनेवानेवंनञाचकुमगानतिखंनराविद्य
 निवाचनस्वनाथक्रियनेअपिचञ्चननेवरेगवर्गिनिखितविधौयंसमस्तस्वन्मलयिर्दुपुहवतीगितद
 धिनाङ्गदृष्टलेनवादनयात्यादनायनञाचकुलिखनंनवसिर्नलेखिगवगखनवकहिंवज्जयाकाचमपिव
 कुवाउञ्चकनलिखितवर्ग। अथकूटागमनात्यलोमइत्ययमनेवंनहिरेगवगावज्जयाकानस्यद्वितीयवा
 नायकिः४कविइकागकिंवादिनृत्या। सकृन्इत्यन्तमेवहिंवज्जस्ववध्याकाचादिकंसमस्तसमानायञ्च
 नास्वरावमायामयमवर्तिष्ठनवाविद्यमानत्वपिचञाचकुसामस्तुतेष्वतिखनापपरिचरकैवाकम्बिगु
 ति

कचिदञाचकुमपितिखितुंसमन्नागराः॥॥॥॥निमङ्गवज्जमनुत्त॥ १ ॥पिनुकुमाकमस्तुल्लुकु
 टागमनपर्यन्तंयष्टवगाकाधानाहुविलमषीवञ्चनकूटागमनस्यमध्यः॥आत्य४कष्यवोड४भीगनकसर्वः
 नचमस्व४॥सद्यकने४कुनवकुपप्रानि॥वामेद्यल्लविनामनिरवजान्वियाग४॥स्वास्वर्गवज्जालिं
 क्रित४॥नस्यएवोदिदिङ्४वेनाचनादय४अग्ययादिविदिङ्गताचनादय४गुवेनाचनाहु४॥न४॥
 कृकृष्टनक्रमस्वस्वकुवज्जपुनीकद्यल्लमलिरवअध्व४॥उकेष्ववज्जमानेवचकुज्जयुथर्मसद्यवड्ग
 इक्षयावदामयअधस्माद्विद्विपनियादनकुम४॥मूलसद्यवामक्रमनमस्वपुयवर्तुपुनिपादनंनत

माम्नायागपूजादिद्वारेणात्मनयादिकोत्पत्त्यर्थमथ यथाक्रमं दशकोष्ठाश्च गुरुयमा नकः ४ रुक् ४ रु
सितनकवकु वज्रमरु नचकु वजातिरुदिवा मया गजनीयत्वा पुष्पनविश्रामशा पुद्गलक ४ रुक्
गहासितकृष्णकवदना वज्रवजाकि गसितदलु खज्ररुत्तया गजनीयत्वा पुष्पनरु गयज्ञा नकाच
काचक रुसितस्थानक पञ्चवज्रमखल दलु पुष्पया मधन ४ विद्यानका नीलो नीले सिंगनका स्थानि
थवज्रचक्रमखल सपाग गजनीयत्वा पञ्चवज्र ४ अवलानी लानी लानी लसितनक मखल ४ खज्रवज्रचक्र
गजनीयत्वा पुष्पया मया ४ रुक् वजा नीलो नीले सिंगनक मखल ४ यालिखी वज्ररु काचमडा मयवैवज्रवज्रया

गोकुलान् विजगता नीलदलु रुक् ४ रुक् सितनकवकु वजां कौनीलदलु खज्रचक्ररुत्तया गजनीयत्वा
मयपुष्पन ४ मखल ४ रुक् ४ रुक् रुक् नकवदना वजां कदलु खज्रचक्ररुत्तया गजनीयत्वा यज्ञपुष्प
न ४ रुक् रुक् रुक् रुक् रुक् सितनका स्थान ४ यथा ननु ज्ञानमप्येष मर्दिधनयन ४ रुक् वज्रयज्ञ
नीलवज्रान् पुष्पनसमालोकनपालिबलामिकानखपात्रययिष्ठनरवो धनयै कनिष्ठं वीग यैवमथ
मसमनखगिरिखर्षकपुदगिनीमत्थ ४ रुक् काचेलगिरिममनावरु सानामडुष्यमडा कविग ४ रुक् वि
लन्यथागसूनाज ४ रुक् सितनका नना वज्रचक्ररुत्तया गजनीयत्वा खज्रधन ४ रुक् वज्रजोखा दया

विश्वयज्ञाय नियथा कुर्मं पञ्च कवज वज्र नवांगम च कवज वज्र कवज यज्ञवि
श्ववज्र वज्र वज्र विश्ववज्र नाग के भनय च वज्र नव यज्ञ वज्र विश्ववज्र वज्र मज्जा वज्र वज्र कवज वि
श्ववज्र गवज मज्जा वज्र नीलदल कवज दल ४ वज्र वज्र सूर्य चन्द्र सिन्धु मरुता ४ वज्र ४ वज्र मज्जा
५ वायु नन नवायि स्वदव गावर्तु पा ० नत घटि गा न तु वे नी व ना द वा वा भि स त्वा च्च ४ ४ न्य सूर्य
४ ४ अक्षा दयो वज्र पर्यक्षि ४ ४ काष्ठा गुणाली च च न ४ ४ युगि व कुं न क व तु त पि न गा क त ना हि
ली माना च कु क वि क न न्या दि वि ल ष त भा ति न ४ ४ अ व क म उ व स व ह्य प न द व ना ४ ४ सूर्य य नाः

निष्ठ ४ ४ नवा व क र्मा मु य मा न का द य ४ ४ सखा ह्य पु ह्ना ४ ४ च य था कु र्म व ज व ना ल्य य ना जि ना ह क र्मे क ज
टी विश्व व जी विश्व न ती विश्व य ज्ञा विश्व क र्मा ग ग न व जि ती ध न ली ध ना ४ ४ अक्षा ल्य स ह दि ह न स त्वा द्वि गु
ज ४ ४ सय ह्ना च क र्मा स ह दि क र्मा र्त्वे ना च न स ह दि उ न तं ग स स्या ४ ४ अ मि ना ह स्या ४ ४ अ मा घ स
हा रा ता व ना दि द वी नां तां मां यां नां ज ४ ४ वं ह ४ ४ स र्वा व जा या ४ ४ र्वा र्मे गु या य स नां तु र्मे थौ उ उ उ ह उ स
४ ४ द ग क्ता नां ह्ना ह द य म नु मु द व ना नां व जा व त्या म का ४ ४ क ले ग स्य जी स म न ह द या र्क स त्व ४ ४ य वी
क ४ ४ कि नु व ज व क य म य ४ ४ म सि त्व ज ध न ४ ४ सार व ज धा ली श्व नी स मा ति कि न ४ ४ न था ग ना नां मा म की व ज या

७

विमरुधाषाषसूराजा नामका सध लावना नूयवजा मेय यकिनिग र ४ यमान क का वलानी वे वावन ४॥
मद वजा खग रेपु ह न कठ किना जानी न ले म ४ पा लु ना ग ध वजा ला ध्व त य मान क नी त द लु ना मि ग र
शा ता ना न स वजा स ग विजा विष्क मी विष्क न क म ला व ता ना म मा घ सि धि वि मि य ॥ श्री रं य र म न्द्रा क
वज स त्व म लु स वज य र ना ह न व न का च क ना रि ग र् अ नी लान त ज त ह म लु त स म नू य नि ध म्मा दि यो द न
कू टा ग ना द न कू टा ग ना व न का च क रु य मा वि ४ स य मि रि रु ज व जा क म च क व जा लि द धान ४ वा मे मि रि रु
ह न स त रु नी पा म च ल य र् ४ पु ह न को व ज पा र् व ज ख ज र ह दि ग र् नी य ल य र् ४ य मा न क का नि म

१०

७

उपमं ख भं क र य ल य र् ४ पा म च वि द्या नि व ज च लं वि श्व व ज च कं व र् नी पा र् म र वे त य र् ४ रा ज
च ल ख ज च कं व र् नी य र् ४ पा र् म व र् ट कि ना ज ४ स र्व न च क द य न व ज र् का न म ज म क म ख ज च
व ज पा र् म वा नी त द लु व जा क नी त द लु ख ज च का लि ह दि ग र् नी पा र् म प र् म य र् ४ रा म रा व त मि य त
ख ज च का लि ह दि ग र् नी पा र् म प र् म य र् ४ रा ४ षी ष च क व र् नी म दि ग र् म य न च क न द यो ४ षी ष म डी य क
प र् म न्द्र ग र् नी ख जो व र स र् वा व ज च क व ता नि ह दि ग र् नी पा र् म प र् म ख र् व ४ न र् म ग र् मि र स य च क पा
त म लि गो म च कु दि य क र् म डि लो ग ला व त मि ग म लु मा लि ना य थ क र् म वे वा व न च त म मि च र म मा घ

७

७१
 ७२
 माध्वन तैमिना राभाया आया आत्यमडिगां निग कूटागनगरवज्रधन ४ मस्मिन् नैयड कानवि
 वसोतवर्क कूजय रूटनिविषमनिविष्व कूतिगतदत्तावामवतिगाधसुधीसूर्यचवद्वम कूरत्ताठायाविपक
 कनारवकी कलुतकली चचकमवता रम्भारविताहिमरवनीतने क... निवकु... निमस्वविनय ४ य
 पुजावधु... विनाजि नकुजयग्मासिंगस्वा रपुद्गमनावरुद्धवानन्दित ४ सयुक्तार्थी कयाली कभवना बामासी क
 यातयस रन सूर्यय एमभुवी विष्वयभकभू र्वव उर्ध्वपर्यत्तवनवना सुनसेला भुवी गदुदिवि ४ धाकु नोहानम
 लोनकमिग ४ सत्यपर्यक्षासू चगुपचरद्वम कूटीचला रचने ४ सवजवज स... धिकनका उग स्वा रपुद्ग रुद्ध

दिगुविल्लो कूहृत्कावनय ४ समाधिसत्त्व ४ असुत्रिसत्त्व लकवजधन ४ यववेजावन ४ भुय ४ सोमचतुर्ज
 ४ सवर्णचक्रयत्त ४ वामासी कयातलमधन ४ दक्षिणचक्रयत्त ४ पातचक्रयत्त ४ सवर्णचक्रयत्त ४ कलावामासी क
 यातया... मीपश्चिममिमालो चकवर्चचतुर्ज ४ सवर्णचक्रयत्त ४ वामासी धनपा... ४ उरुच ४ मोघसिद्धि
 रुनित ४ सवर्णचक्रयत्त ४ वामासी धनपा... ४ उरुच ४ मोघसिद्धि
 न... वामे ४ कयातयत्त ४ पातचक्रयत्त ४ असुत्रिसत्त्व लकवजधन ४ यववेजावन ४ भुय ४ सोमचतुर्ज
 यमालि वामे चनचक्र मधयत्त ४ पातचक्रयत्त ४ असुत्रिसत्त्व लकवजधन ४ यववेजावन ४ भुय ४ सोमचतुर्ज

निवामेद्वेन कया तपा मघल्ल ॥ वायुयुगा नारुनिगा सुकुजा सवे नका सतखजा कु मवा लनिवा मेस
 कया मकया लधनं विविदिगी ययुट यवस्थी दिमि वज बोडी मुया वा लर्म कडा कधन ४ गु कय र्क कया ल
 कया दजिल स्या वज विमो पीता वज ४ तं च पा म न क य र्क क नाट क य पश्चिमा र्या नाग वजा न का सवज वज च
 विनि य र्क कया लं घल्ल ॥ उ रु न स्या वज सो म्या रु नि गा ॥ पिदिनी विपना कां च वज कया लं व ॥ उ म नी वज य ॥ १२
 सिम पीता ग द कु म सत ख कया लं उ म र्च व ॥ आ ल न र्या वज जा किनी पी ग न का ॥ प म द र्या ल क म द ४ य र्क कया
 लं य र्क ॥ ने म स्या म द वजा न क नी ला ॥ म किं म र्च व च क न क य र्क कया लं च वा य र्क पृथी वजा रु नि ग सि

न कमल कलि म क म तप दी य य र्क न च व र्म क दि न कया ल घल्ल ॥ न गा पो व कु कु जा ४ ए थ म वि क द य
 स र्क ल ज प च द र्या वा मा र्या वि उ ल ॥ रु नी य य ट पा र्या दि मि रु स न का ॥ स व ज व ज घ ल्ल क स्या रि न य क न
 द या ल अ वा र्या ता र्या ती ला ॥ व ज व ज घ ल्ल धा नि स ग र्व ता र्या रि न य कु ज य ग्मा ॥ ए नी र्या नी गी पी ग र्क म न
 का य मी ष ज्ञा त य नि ॥ ने म र्क म क ना मि गा वा य र्क न जा धू म व र्क उ गा ४ व ग ४ स स व ॥ शि वा द न य च क र
 द या ४ ग ग वा द य दि का या मा ल न र्या प र्या ४ क ॥ य र्क मा ता च क धा लि वा म ग न कु जा ॥ ने म र्क म ध्या धू म व
 र्क धू प क ट क च त्र या हि वा म ग न रु ला ॥ वा य र्क दी या क न क व र्क ॥ धू न दी य य रि य म वा म स य रु जा ॥ ने म

न्यागिन्धनकागन्धर्वस्वजध्वनिवामेगनकनायपायामादमीत्वनादप्यलरुगनुजयग्मात्प्रवाचीप्रसा
 नकाध्वननस्याप्ररुस्वध्यापयगीर्वाणस्वर्गीनीगाविध्यवरुहगनुजध्याउदियिधर्माध्ववत्ताध्ववन्ध
 मादियाध्वनिकनध्वयगाजगाध्ववेनावनादयोदवमानकवकुम्भिनेयाऽकस्रजगामकूटिनऽपयकनाटक
 ह्यलंरुगादिद्यवाससाश्चयर्पकनगाधुविन्यऽपर्वदाववर्जाकुलीगगनध्वमाकस्रसिगसध्वनवकुम्भज
 सध्वनिकुमस्वजवकालिविजगीवामेऽयामगर्जनीध्वन्यऽपदक्रितवजयाभीपीगाकस्रचक्रसध्वनमस्वी
 वदुज्जासध्वेऽयामवजध्वजान्वावामेध्वकध्वन्यसगर्जनीयामान्पथिध्वमवजस्रध्वनकाकस्रसिगसः

यगनमस्वी।षडुजासध्वेर्निगजवजाभीन।वामेध्वकध्वन्यकस्रमान्पथध्वनवजध्वन्यरुनिगाकस्रसि
 गसध्वनवदनाषडुजासध्वेर्ध्वनवजाभीन।वामेध्वकाकस्रयाभीनानुगाध्वन्यऽपनिवकुम्भिनेया
 कलद्रुधकपिलकनलाऽपयकयासचक्रादिरुधन्यायुवध्वमिध्वनोऽपयसीरुनेनरुनाविध्यकया
 तसूर्यतलसंरुवामिगारामाघसिद्धयोऽपिविध्यकनाटकवोऽजन्मसुसर्वदवगाविध्यसवाजकनाट
 चन्द्रऽसूर्यपुलाकुसर्वानुव।अगवजस्रत्वजवस्युहः।न्याकुसर्वदवगानिऽपयः॥॥॥कयकशस
 स्वापुहः॥॥निदिगीयऽ।कलभकुवजस्रत्वादिगधगनाना।मामकीभद्वजागीगाध्वनवजाध्वमध्वनव

वा

[illegible]

ॐ नीतिनगरिखिनागुरुविष्णुनाभाच्च॥ नवंप्रागुरुनयचवदिगवामिनि॥ २ ॥ नानादोकिनीमनु
 लवजयऊलाखननविष्णुपमविष्णुवजनाहिरुदुतागानमत्तल्लवगचुगमिहल्लविष्णुसूर्यहानः
 जकिनिनीलाअस्यामकूटपट्टवद्धमपनिवजांकल्लनगयचरवद्धेम्भुगिर्गमल्लमखर्वद्धसादृशासंस
 यमुकूटसद्दामनकंभंगमनंयुगिमखर्वगिनगालिरेदद्विलजुजगुयडुद्धीनकनखद्धाङ्गपभुवजचरा
 यामगुणद्वयनकापूर्वकपालखग्रा॥ अस्याष्टपर्वस्यादिमिवजजकिनीभुद्धाङ्गमचचसा॥ उरुच
 र्यादिभिधाचजकिनीसर्ववर्ष॥ यच्चिमायाविरातीनीला॥ दद्विलस्याचभुंतीचका॥ नगाधिचनमु॥

गदलेष्वजा (गेनी वा नी व ऊ जा कि न्य ४॥ द्वितीय पट विष्णु य म ष पृष्ठी दि षू गो चि त्री नी व रु ति घ
 स्म ति ४॥ न म न्या दि षू पृ क सी म व चि च लु ती जाम्वा ४॥ ने ना त्म या दु र्ध पृ व पा त्म्य इ क र व च र्य द्ध म
 खी अथ ४॥ य म्मि म पा त्म र्ध च र्यो ध्म म र्धो ॥ ०० रु क्तै वो पट रु गो र्यो द यो ॥ १०० धा ५ म यु ज म लु त व न य
 ना दि व र्ध ४॥ अ न्या स फ नी ता ४॥ य क र द म्म य ध प र्य क ल म वो न म्म द रु न क गि न रु क व क्ता ४॥ पि
 द म रु जा ४॥ या पु र म्म म्म ना म्म गु रु जा ४॥ म या र्थो व ऊ क र्ति ४॥ वा र्थो मो क पा त म्म र्ध व द्वा ४॥ क र द म्म
 ना ४॥ मि न ४॥ य क पा त सा ता प क म्म दि ल्प श का न ष व सा या म्म त मु ४॥ पृ व व न्म पृ व द्वा त रु या ४॥

सि त नी ता द क्रि त ल म्म क ता स्या पी न नी ता ॥ य म्मि म्म न्म ना म्म न क नि त्ता ॥ ५ रु व सिं हा स्या म्म म न्म
 क नी ता च न म्म य ना ४॥ पु र्वा ती रु न म्म र्ध ॥ क ल र्ति क पा त रु न म्म य न रु रु द यो ना मो न्म व र्ध क
 व क्ता दि दि व र्ध ४॥ अ प र्ण वि ल म्म ल मा सी ने ना त्म या ०० व र्ने ना त्मो दी नी य ध्म क म म्म शी र्ध म्म म्म
 च त्म म्म मि ना रु मा द मि दि द्वा र्ध म्म म्म न च त्म म्म मि ना रु मा द मि दि व र्ध च न्ने म्म दि ल्प ॥ व र्मा दी
 ना च व र्मा च न च त्म म्म मि ना रु मा द मि दि ४॥ ने ना त्म या ४॥ द्वा र्थो ॥ ०० उं ०० स्वा रु मि रु द य उं उं
 स्वा रु मि ॥ य म्म र्थो ४॥ स र्ध क मि क म रु ४॥ अ प र्ण ने ना त्म दि र्ध क र द म्म द यो ल क म रु ल्प ॥ न रु

सद्धिदि ४८ ४८ ४८ कर्क कपा ल ४८ तम यन न कल दया यहा य वि न या लान सख द्वा ज अय न पर्व व
 ग ४८ अ ४८ व ज य स नि ३ ४८ सो ह ति द्य स नि म कु ४८ ॥ ४८ ॥ य द्य म कु ले म क न क लान न क
 वे तु ४८ जी वानां क लो स द्या र्था न को न्य ल ध र्मी षा वा मा र्था वि र ली पि न गु क व कु मि ता र क ल
 म व द्या या ४८ नु द ध न क व र्म ४८ म न ध न क न द्य या य क ४८ पि न का क म वा न ४८ नु द ४८ अ २०
 द्य प र्य क्त ना क न क ल्या या म द्वा र्ज जी ४८ क ल क र्से जी ४८ स्वा र्थ य द्य द र्य ४८ अ य ल प र्व व न न द्या क
 न क ल्या म कु र व ति ४८ ४८ व ज म न म कु ले व ज य ४८ ला क द्य मी द या ग र क क टा म न स

३४ मं ग *

म ल्ख वि ४८ व स व न नो षी व जाम न ४८ स ल प र्य क्ती पिय दु ४८ म ४८ सि न न क म ल स व वा म म र व गु य
 वि चि व क ठ क य ना दि रि व म् ४८ ल क न ४८ व कु ज ४८ स व ज व ज य ४८ नु ज य म्मा ति जि न स्वा र्थ पु द्या स
 या र्था च का सी वा मा र्था या म क सो वि द्या ल न क पु र म कु ल ४८ ४८ ज न न स ना वि ४८ प र्व द ल सो म्मा
 सि ना र सि न क र्म न क व कु य या र द कि ल सो म्मा व द ना पी ता पी न सि न न क वि व द ना प छि म व डि
 न क र न क क र्म सि न पि म र्वा उ रु न म मि नी रु वि ना रु वि न सि ना न रु वि म र्वा अ ग्नि य म मि म
 लु ता नी ला नी ल सि ना न न पि म र्वा न म र्म म सि ल स्वा पि य गु ४८ म्मा पि य गु ४८ म सि ना न न पि म

स्वी वायव्यमनाहानीतात्यतवर्कानीतसितचक्रविवकुपुष्पमनमनाह्लादनकनीसर्ववर्कगद
कुष्ठकचक्रविमरवीरानुगादवाग्यकुष्ठवग्वधुजावर्कमवच्चिद्रुतगारकिंकुचकुम्भनचन्द्रमल
तंविजयमभितरवाग्यकांचिन्नुकर्तादिनीयेष्टनेमानकोत्तपष्ठाभुक्ताकुष्ठकुष्ठचक्रवदन
गुयाज्जलनयेधपाधमवर्कवाधमुसिताचलविमरवाग्यनेअनदीयाहमवर्ककनकसितकृष्ण
स्वकुयावायव्यगन्धचक्रचक्रकृष्णविनविवकुपुष्पनायथकर्मसवायधनकचलपूषकचलुक
धूपकठकृकदीपयष्टिगन्धमंखध्वनिगुहासकनेत्रायकचिद्रुतगारकींकुचकुम्भनचन्द्रमल
स्वी वायव्यमनाहानीतात्यतवर्कानीतसितचक्रविवकुपुष्पमनमनाह्लादनकनीसर्ववर्कगद

लाम्कृ० मन्त्रा। चकपीनसिगधमवर्षं वंभादिवायेंदनयचद्विजुजैकवकु० पूर्वघावहक
 टीगर्नमानह० म्भाभो म्भमभीनचकृतिमखषादजित१ हयलीबसैय० सिगकृ० चकृतिवकु०
 यमिमरुयनपाचकृतिमकृ० पुमख० उहंभगलनायका० हनिमसिगाच० पुमख० नगल
 सिगकोधातालेनयदन्नासेननिषकु० म्भकृ० म्भविहृ० म्भवि० पुधनसवकनेलयचैयै० कुर्मज्जुम
 पाभनिगज्य० हग० षड्कृ० कनातिन० रुचकृ० पुनिविविगय० नधमंनयजांकितावि
 चिउनलमकृ० गदयचविंभनिधवगासुवजासुगपूरुकां० लमकृ० टिन्य० चसुपुचिव
 २यथा०

वि

विचित्रवस्तुनत्वाहवनादिकाः। पृष्ठादिद्वादशानीतुचत्वाध्याविष्यसनीजानिरवजामतस्यहृद्दीर्घः
॥ ४॥ ३॥ ४॥ वजामगस्वाहितिहृदयं॥ सर्वकर्मिकेवदीर्घपञ्चवजामगनुयस्यनर्वपुकाचरावना
कमावजामगगनुवदितव्यः॥ विस्तृतगामादनुनाकं॥ ॥ नवात्मकस्यहृदकवतुष्टयस्य
मनुलेवजयऊवाह्यकनेधमादयोहृदगामवशीतुजस्यपूनमन्त्रवजमकुलवडगामनः
चकुमष्याहीनिदिगीयपञ्च॥ हृदगामवस्यमध्याविष्यकर्मिकोपयमान्द्विचित्रगर्हद्विचित्र
विचित्रस्थपञ्चननूपमानवतुष्टयहृदयस्यहृदयवतुष्टयवत्माननवनाद्यनर्पादास्याम

२२

वि

अपर्यक्तलज्जपञ्चरायांमातीटपदननर्पनिनविष्यवजाककलहृदकपिलककलारतादापतिनिः
स्वस्तिगयचमूलुलेमलुगपञ्चवृद्धमकुटिकवर्त्तः॥ ४॥ ३॥ ४॥ जगुजास्यः॥ यनिमूर्त्तनकवतुलः
विभगामतमर्त्तकस्यसुखानिनिगकस्यनिवामानिचककस्यकस्यन्यर्द्धधमवर्त्तः॥ विकर्त्तः॥ सर्वमर्त्त
निसकृत्कृत्कृटीमंकानिदस्यकनकनातानिसुखास्यकने॥ कवतिनकपालस्यहृदयवत्तगामवाधुम
नूषासवरागव॥ वामास्यकलकपालस्यध्वीवचववायुगजध्वजदिखायमधनदा॥ वकीकुलुलकली
नूचकमावताहस्यानिसाधयचसन्नवगिन॥ ४॥ ३॥ ४॥ कयननोपनाविचरुष्यमानि॥ अस्थयहृदनेनामान

गमरुत्तकालि कपाताच्चि तस्य वाम उजाखी रुगवन्मालि ग्वयत्ताली रुन न ह कीप क मं डिनी च कवर्ग
 लछिन नुदंष्ट्र कनाले कमखी कल द्रष्टु पि न कभी तलाटा गट रूप क म लु गला गलावती वि नु क न म लु मा
 लानूय नादि रुषि मा ॥ पद्मादिदि ग्दल रूप वृक्ष द्याप उन्न द द द्य वि ल्य ष्ठ गो र्पा दय ॥ ॐ ॥ नादिदल रूप
 यम कवर्त न म ग वाम वि वि द दय द्य ष्ठ क स्या दय ॥ ग व गो नी कृष्ण स र्थ न क हिले वाम न नादि न वि उ मा
 गो नी न का कृपी ग ४ क न रु ग स र्थ न क ना ॥ व गो नी क न क व र्ध क र्म य न रु ज न रु ग स र्थ वाम उजा ॥
 यम नी ॥ मा स र्प या ग या नी धा नि स र्थ न क ना ॥ य क सी नी ल सिं ह य म रु रु ग व वाम पा वि ॥ स र्प नि षु

२३

यारु रु वि वि नि धा नि स र्थ वाम क ना ॥ व उा ती न रु ४ ॥ मा व क ला इ ल क लि रु द क्रि ल वाम पा नि प ल वा ॥ अ
 म्बी क व र्ध न व र्ध व ज ग र्ज नी रु ग स र्थ न क ना ॥ अ ष्ठ व र्ध य र्ध क न ल्य व र्था ५ प न वि ल ग र्ध र्काने ना ल्य व ॥ रु
 न क र्ते ना सा या न श्रा य ४ क ल ४ ४ ॥ गो र्पा दी ना म श्रा य वे ना व न र स म मि गा रा ४ य क र्क स्या दी ना क ॥ अ
 थ वा वि रु ज व क म इ द्र रु ग स र्थ रु ज न व र्ज वाम न व र्ज क पा ल द धा ना ने ना ल लि नि ग वाम वा क म क ॥ अ
 थ वा व रु उ र्ज ४ व क लानी ल ४ स र्थ क न व र्ज वाम न व क र्क क पा ल ल ष ष रु ज खी स्या रु व र्ज वा ना ही मा लि
 जि ग ४ ॥ अ थ वा व क म ४ व रु ज नी ल सी व न क स र्थ न व वि व रु ४ स र्थ रु ज खी व र्ज क हिले वाम खी वि ४ ल य व

२४

दधान ४ लघाया वज्रं खतामालिङ्गितं वज्रं ४ खिता कुवर्तव कुजुजादिरिन्नेनात्मा सदृशी खर्नग वज्रपादा
अननद्विजुजा दयाविष्वाङ्गस्यैकनभवात्तस्यै १४ ययिक्लिप्तनर्त्यमा १ श्रीसमृद्धिगाविष्वा वज्रककतद्रु
कमा ४ ययमृगुमगुगा १ सऊरुङ्गुरुकूटीदंष्ट्रकनातिन ४ पाऊलउजववकादिरिहृषिगात्मे यदिदवी
रि ४ ययिवृगा ४ ॥ दद्य ४ सर्वास्मनहिगा वज्रवानाही वज्रं ४ खता १ श्रीसमृद्धिगा ॥ हवजवगुययस्यद्वीज
मं ॥ ३ देवयिचवज्रं २ रुद्रस्वाहनिहृदयपादगुजस्य ॥ ३ नृसाकाशयमं २ रुद्रस्वाहनिद्विजुजस्य ॥ ३
गतकलसाहं २ रुद्रस्वाहनिचगुगुजस्य ॥ ३ किटिकिटिवज्रं २ रुद्रस्वाहनिषट्गुजस्य ॥ ३ आ ४ वज्रयस्य

[illegible]

लीजनदधना ४॥ अथ वयममार्कं मधुसूता सुवन्धा कलसिद्ध लाई मर्द्धजामर्द्धि पचकया तुमाइ
 लिन्य ४ पचमूडादिमल्लिगा गता वलम्विभर्द्ध पचमन्न नमिन्न ४ (४) लयन ००० पदं कना तथिनं गुं
 कवकु ४५ गुं ४५ ॥ रुगवना १५ ॥ अथादिपच वद्धे मर्द्धलं ॥ विगसनादिनामकोखवे प्रावन वलसं रुवा
 मिगार ४५ ॥ लोभिल्यादिनामपाने ४॥ अथवायन रुगवान्दि (५) द्या ४५ ॥ कविदि (५) द्या नकर ४ निष्प
 क्षयसुपुष्टा ॥ ॥ वज्रकालमधुसूत वज्रपञ्च बाकर्द्धभादियार्थी कूटगानस्यमश्च विभवा कूसर
 पचिरं नवका नलाया वाती उचनत्त र्थीमाका कुरुता कविजयारुगवान् कृष्णनय तयानल वज्रत

२३

काल ४ कवलसयनिवजगदि द्युदना निनी लानी लयी गरु निगम तस्य नल व्याकु वि कगव कुय याद ४
 कटलतकि क १ गिरीष ४५ पानि मर्द्धस्य र ४५ कटि कटिलन कवर्ण लयिनया तला पातिपच क
 या ला वलि म्जला वलम्वि न गल दमुप चमर्द्धि न ४ (४) ली क ४५ म्जानी न नवल तयि गोर्द्ध कपिल कुरुल
 न क गज क क ग क ४५ वरा साम्भालध वल मला पन्न क नला ना दूर्वा ४५ म क कटि क क ग य क्षयवी न ४५ क
 वासुकि ॥ क ग म र व ल ४५ न न स र न पन्न क ग नो पन्न ४५ पी न म र व पान क ग क क लो धू मार क र्द्ध न क लिक
 क ग क य ला वज्र सत्व मूर्द्धि गो वज्र वज्र पन्न रु कुजा र्थी गुं ला क विजय म्जया खारय हस माय न्ना द किल पा

विष्णुर्जं कृष्णपात्मी वामास्यां कपातस्वर्धां विष्णुत्मा राव ४१ स्वर्जं पूर्वस्यां दिशि वज्रदंष्ट्रुनी सानीतपी
 गरुडिगमत्तस्य गन्धर्वकु ४२ स्वर्जं कुजास्यां वज्रमृक्षं मृक्षमिति गन्धर्वनी वज्रं वामास्यां वपातस्वर्धां गद
 ध्वन ४३ उरु वस्त्रामनता कर्षणी गपी गनीत रुनिगमस्वा वज्रदंष्ट्रुधन ४४ प्रधानपालिना वज्रादि विष्णुनि २१
 वज्रदंष्ट्रुस्य वास्य वज्रमात्मनो च पश्चिमाय विजाष्णानका वज्रसि गन्धर्वकु वज्रपद्मपा विष्णु ४५
 कृष्णस्यां वज्रकुलिहति गन्धर्वी विष्णुनि गपी गन्धर्वदना विष्णु वज्रविग कर्त ४६ अग्नि स्या विजय आ
 ध्वस वदं ध्वसपी गन्धर्विगमस्वा ४७ मध्वानी गन्धर्वी वज्रका लोचनका वज्रपी गन्धर्विद कु ४८ पद्मपा विष्णु

का

वायुर्वा मर्हो लोनी लोनीतपी गन्धर्विगमस्वस्मि ४९ तपा वि ४९ वेसा न्यां वज्ररीष ४९ कृष्ण ४९ ककल ४९ क
 षपी गन्धर्विगमस्वकु ४९ स्वर्जपा वि ४९ न वज्रदंष्ट्रुदया ५० यथा कर्मयमा न क पुष्प न क पद्मा न का
 म न कुलिहति विष्णुना जनीत दंष्ट्रुम हाव लाव ताप न नामन ४९ उद्वमृक्षे वज्रकु वस्त्रि सि ग ४९ सि गनीत रु
 निगमस्वर्ध्व कपालि ४९ अर्धवज्रपाता ४९ र्ध्वपा न नामा नीता नीतपी गन्धर्विगमस्वा वज्रमस्वतलतिगक
 ४९ वामास्यां वज्रना गपा गन्धर्विगमस्वर्धा ४९ न वज्रदंष्ट्रुदया ४९ काष्ठा ४९ प्रधान विष्णु कपाता कि न कला हा
 मालि कि न स्वा र्ध्व हा कल दंष्ट्र कपिल कृ कला ४९ स्वकृत नात्मा हा हिम कृटा ४९ सगूरु कृटा कृटी कला न व

दनाष्टयगिवकुंनकवर्तुतविनशा नमलुमा लापक मूजाय वरुजगवा ज रुवला विष्णु इत्यर्थे व सुष्टुदि
 क पातान्दनावक्ष्णानैमधवमविगुममा क म्यासी च व न ला र्थास्ति न ४॥ इत्येकं लघु म्रदिनायथाम इव
 जनेलुलस्य दशाचवकुंरुगवनावज हं का न स्या ह दी जं हं ॥ ३॥ खवजधुम्वज हं रुटं ॥ निहृदयं ॥ ३॥ वज
 कुलुतिवज हं रुटं गिवज कुलुलमनु ४॥ सर्वकर्मिकं ४॥ अथवा यदीदि दिग्विदिगु र्वा विष्णुभाज २८
 रान्दनावक्ष्णानैमधवमविगुममा क म्यासी च व न ला र्थास्ति न ४॥ इत्येकं लघु म्रदिनायथाम इव
 था वा म इवज मलुलस्य दशाचवकुंरुगवनावज हं का न स्या ह दी जं हं ॥ ३॥ खवजधुम्वज हं रुटं ॥ निहृदयं ॥ ३॥ वज

विद्याकठगतं ॥ निविद्यारु नर्मकु ४॥ सर्वकर्मिकं ४॥ ॥ समस्तमलुलस्य दशाचवकुंरुगवनावज हं का न स्या ह दी जं हं ॥ ३॥ खवजधुम्वज हं रुटं ॥ निहृदयं ॥ ३॥ वज
 निविष्णु इत्यर्थे व सुष्टुदि क पातान्दनावक्ष्णानैमधवमविगुममा क म्यासी च व न ला र्थास्ति न ४॥ इत्येकं लघु म्रदिनायथाम इव
 रान्दनावक्ष्णानैमधवमविगुममा क म्यासी च व न ला र्थास्ति न ४॥ इत्येकं लघु म्रदिनायथाम इव
 गिवज कुलुलमनु ४॥ सर्वकर्मिकं ४॥ अथवा यदीदि दिग्विदिगु र्वा विष्णुभाज २८
 रान्दनावक्ष्णानैमधवमविगुममा क म्यासी च व न ला र्थास्ति न ४॥ इत्येकं लघु म्रदिनायथाम इव
 था वा म इवज मलुलस्य दशाचवकुंरुगवनावज हं का न स्या ह दी जं हं ॥ ३॥ खवजधुम्वज हं रुटं ॥ निहृदयं ॥ ३॥ वज

लक्षणरूपस्य पवीनीतलाद्यैश्च कयासीमनिवामावर्जिगार्धवर्धविध्वजजाकाककषूजगाम्ठाम
 कृताविकृतध्यानात्कटदंष्ट्रवकुनवनाद्युनसन्निधिः॥वज्रवावाहिरुनकागिननेकवकुम्कैकेकलाः
 कलायानमकयासखलुकनकटिरुषलाज्जतिगनकनधकैनेपासगलिमनजाधनयायुंठ्यापयनी
 पुष्टगार्धुजगर्जनैकवज्रसदृशसकृत्पनीनीनकलेनधुक्नवगिनीमालिनीसूर्ययुगमलुलिनी
 पञ्चमृदिलीषदसुनिनजस्रतानामाचैकैवकिगा॥नगध्यायादिदिङ्गवाभावर्जनवकुदिविदिङ्गदकिः
 भावर्जनव्यासः॥उंमदिग्दस्यजकिनीलामोखलुयाह्नपिलिः॥कृष्णध्यामवकलोववर्धनिनेके

२९

वकुमककृन्तलाभ्यगुञ्जवामार्याखदार्गकयातसद्याखीउमन्कलिकविध्वजजातीटस्य॥विदिग्द
 लषवाधिविरुननजसापन्धमने॥पञ्चपुद्गीयेभ्यसिद्धवसवदमनीरूने॥एतन्नाङ्गजनानि॥वत्वार्य
 पिपञ्चमृगयत्सनिवा॥नगध्यायिरुचकस्यपञ्चसिनावखलुकयालियुव(लु)उरुचमरुफैकात्पुवकु
 ओपश्चिमककात्पुरावलो॥दक्षितविकटदंष्ट्रिमरुनालो॥अग्नेयसूनावेचितीनमली॥नेमनजमि
 गारुखर्षी॥वायव्यवज्रयुहत्कृष्ण्यो॥उभनवज्रदंष्ट्रमकुय॥चर्वकुमलवाकुकस्या॥अक्षनिक
 नावलो॥वज्रजटिलमरुहैवमरुवीनवायवगा॥वज्रकोनसूनाहर्षी॥सुरध्यामादयोवज्रयुहत्

* ५२

रुड। महारुच्यक (विष्णुपात्रस्वगानन)। नथा कायवक्रस्य॥ मरुवत्तवकवजानत्तवजस्वलो गो रु।
 रुयगीवसो लिनी। आकाशगह्वरे कवर्मिनी। श्रीरुच्यकसुवीनपद्मनर्कध्वनमरुवत्त। वेनावनवक्रवर्ति
 न्ये। वसत्तमरुवीर्य॥ खलुकपालादधावीनामिनेयं कवकुजमकूटिनीतलार्थनिविष्टवज्रमातादिगवी
 प्रपन्नी। स्वर्गुज्ज्वला। अलिङ्गनकुजाखी वज्रवज्रधत्त। वामनखदाङ्गसंयन्तमर्भविश्रामवृक्षसंगकमनरु॥ ३०
 कूडयुक्तातवदना॥ ४५ कर्मदिनआलीरुष्ट॥ प्रवक्षुदिद्व्यमिनेयनेकवदनाबीडरूपित्वा। मरुकक
 नग्रादिकुजाअलिङ्गनकवसकपालसंयन्तइष्टतर्जनकरि कीविश्रय॥ ४६ दालषकाकास्याउलकास्याध्वना

ॐ कनाथा जिकि न्यादिव गमस्वानि यत्र मासा नामान् गगानि को लष्य यम पाटी यमदूती यमदीप्ति य
ममथ न्यामान् षीमस्वा ४४ सद्य गवदि लब्ध्या सद्य गव काया द्धम बंदु मम नीना मवास नास्व यवपीमा ४४ स
वर्षा जिकि न्यादि दव गागलाव सप्तिम लुमा लाव जमा ला कं सता टा ४४ य यमं डि ल्म म खे तां से नव पृ धनादि
रि ह्यिमा ४४ कल म मुरु गव गा ५५ ला व जवा ना द्धम वे नाव ना जिकि न्या दी ना न ले म ग्वि रु वा क यव क ग गा
नाम क्रा खा मि गा र मा ४४ स मय व क रु ना अ मा घ सि दि धि ४४ र ग व गा द्धम जी र्ज र्ज ४४ उ जी व ज रु रु नू क र्ज र्ज
४४ जिकि नी जा त स म्ब लं स्वा रु नि द्ध द र्ज ४४ उ ख लु ना र्ज र्ज र्ज ४४ उ ति र्ज लु ना ला याम रु ४४ सार्व क मि र्ज ४४

अपन दवगाम क आहारि ४ धी सम्व नारि समयापे कायाम क ४ अथवा व क ४ दयाय म मथनी पर्य का ४ सद्यो दि
 तुज के व दना ४ मगु सय ग नारि जन तुजा सीप कर्वि म गि वी ना वज द्य ४ ए गा ज कि न्या दि व ग सु ४ का का सा दय
 ४ वामन कया ली वा का म क ख द्वा ग क म धी न उ म न द धा ना ४ अप न सर्व पर्य व न ४ अथवा वि व क ४ दि दि तुज
 स्वप ४ धी सम्व न व ज वा ना के स व र्धु व र्धु नी त वा र ग वान क ग स व न व जा सा स न पे नी वामन कया ल ख द्वा ग ध न
 ४ स व ज व ज द्य ४ सी द्वा र्थी म पालि जन य ना वा ज कि न्या दि व ग सु ४ पी ता ४ स व न उ म न रू ग ४ विरु व क स्य वी
 ना ४ कृष्ण ४ वज्र व ज द्य ४ ए गा वी नि व्य ४ सि गा ४ स व ज न र्जु नी क स य क ना ४ वा क क स्य वी ना न क ४ प म

२१

प म प ४ ए गा ज कि न्य ४ कृष्ण ४ स प म न र्जु नी क स य ४ का य व क स्य वी ना ४ तु या ४ व क व क द्य ४ ध ना द
 थान का स व न स ग र्जु नी क व क रू ग ४ सर्व वी ना आ रि जन य ना ४ आ ती र रू रू र्जु द्या व रू न य ना वी नि व्य
 ४ का का सा दय ४ स व न स ग र्जु नी क क रू ध ना ४ सद्यो दया वाम रू रू न कया ल धा नि व्य ४ य म दा द्या द य ४
 स व न द म नू वामन स ग र्जु नी क म र्जु वि आ ल ४ ज कि न्या दी ना का का सा दी ना क वाम वा रो ख द्वा ग ४ गा म्ब द्या
 द म र्जु प र्य के ल नू ख व रू ४ अप न सर्व पर्य व दि ति ति नि सम्व न म लु तानि ॥ य दा ल्य म प कर्वि म गि वी ना
 न रा य क व ज वा ना ही व क ४ ए व ति ॥ न दा र्थ लि व ज वा ना ही म लु तानि व ज वा ना क म दी र्ज वं ४ उ व ज वे न

[illegible]

काटि ४ य वेव वृद्धमकटी ॥ अस्मिन् ४ ययसी विग्रसना निर्वसना न स्तु ३ मा ला कृत दूर्ध्व मक कपि
लकृ नलाप क कया ला क मि न छ ष के ना ल द म न वि न य के व को न का र रु क न्ध ना स के वा म के न क या
त गालि न न जा धा ना पु र्जु पा प य की रु न ना रि न य न स क र्ति स व य उ जा ॥ पा नी न कृ ष ना य ति द ल षू मा
ति नी उ दी वी न क या ति नी ॥ य म्बि म री मा ॥ द किं ल द र्ज या ॥ ने मा ना दि द ल षू द किं नो व र्ण न ॥ क व ज ४ य
॥ म न य दी ष प र्ण नि क या ला नि ॥ ॥ य मा य प ट नी ल क र्ति भा व ती व र यि र्ग ॥ ग ना द्वि ती य प ट न का
॥ व र्ण ष प र्ण न क व जा व ती व र यि र्ग ॥ ग स्य प र्वा सि ना न ॥ गु र म र व ला ॥ उ र्ध्व न दू पि नी ॥ य म्बि म वि ऊ

[illegible][illegible]

॥ ८॥ ना ॥ स्ववाह नमः परमसूर्यस्य ॥ ९ ॥ पूर्वस्मिन् वज्रजकिन्त्या ॥ १० ॥ पृष्ठगाजकिनीसिनासुखजिफरुलद्वयाग ॥
उरुनेधानजकिन्त्या ॥ ११ ॥ पृष्ठगादीपिनीपीनोमूद्वीदापवग ॥ कना ऊरुलियम्विमवलात्मा ॥ १२ ॥ पृष्ठगम्व ॥
लीनकनूचिना ऊरुलिवकप्ययंती ॥ दक्षिणवज्रजकिन्त्या ॥ १३ ॥ पृष्ठगम्व ॥ कना सीद्वी ॥ थापीनम ॥
लम्बगम्व ॥ १४ ॥ पृष्ठगम्व ॥ गमावजावलीनाविषसियाद्वीरुवृत्तुलपटयम्व ॥ १५ ॥ पृष्ठगम्व ॥
जाविठीवलीपियसरा ऊनरुहुजयग्मा ॥ १६ ॥ उरुनसीधानीनूचिनमास्य ॥ १७ ॥ पृष्ठगम्व ॥
॥ पश्चिमायां उगीहलिनाविरहस्थवतिरुत्तुवगकना ॥ १८ ॥ दक्षिणसीकयालीवजीकं ॥ १९ ॥ मानरुत्तुरुहुजा ॥

३७

नेमान्यां लाम्भगवृरुकागम्भचगम्वरां ऊनविद्यनी ॥ आग्नेयावीतावीतावादयनी ॥ पृष्ठाचपृष्ठास्रि
पकीगनेमसीगीतामस्वागुगर्हनी ऊरुलियनी ॥ ध्याचसधपकटकना ॥ वायवीं नृणां नृणां इषी ऊरुलि
गदीपावसदीपयातिपलवान् ॥ २० ॥ ना हनजकिन्त्या दयमुयमिं ॥ २१ ॥ दद्याद्विजुजाम्बिनं कवकुमककं ॥
अमिनसिपक कयालमासिन्या ॥ २२ ॥ ना हनजकिनी उह्वकनी सिंदिन्या दयानकवमु ॥ २३ ॥ पृष्ठगम्व ॥
कोलद्वीचाधायविय ॥ २४ ॥ पीना ॥ २५ ॥ नद्वीचा ॥ २६ ॥ दयानकावायवद्वीचा ॥ कयालदय ॥ २७ ॥
अरुद्वीचा ॥ २८ ॥ गमावजावलीवलयद्वीचा ॥ २९ ॥ दानपय ॥ ३० ॥ कासूचसना ऊचडासनानि ॥ ३१ ॥

गमनयंजकि व्यादयध्वनश्रद्धा प्रस्त्रियन् ॥ द्वितीयपूठमकूयगमनयमिखयन ॥ वरुलनदिमि
 कश्चित् ॥ ५०० ॥ यमानमभुलवजयने नमः ॥ धर्मोदयादनरु कूयगमनस्य सध्वविध्वनोडस
 ययत्रिस्त्रिगारुलोकनकृद्वरुक्तमदिवयुषविध्वनस्ययमयस्यालीरयदायामाकमस्त्रिग ॥ कूयव
 उभयुद्धमूदकावजारुनधरुषिगशाखवेलम्वानेदे ॥ यीनागलावलम्बिममधुमालालसकिंका
 लदक्षुकेनालकृष्टमिगनकमलसव्यवामवदनायडुड ॥ ककि कयालाभिगमयनकनकाशांस्तरुय
 सामासिगनसव्यायांवेजमीवामायांकेकाङ्कविया ॥ नानाकादिनागरुनर्तुलायविजय ॥ ५०० ॥ जस्य

३१

पूर्ववेनावन ॥ सिग ॥ सिगकृष्टनकमलसव्यनवकु ॥ सव्यरुडायाचकासी ॥ वामामायांनती
 राङ्कविया ॥ नानाकादिनागरुनर्तुलायविजय ॥ ५०० ॥ यीनागलावलम्बिममधुमालालसकिंका
 लदक्षुकेनालकृष्टमिगनकमलसव्यवामवदनायडुड ॥ ककि कयालाभिगमयनकनकाशांस्तरुय
 सामासिगनसव्यायांवेजमीवामायांकेकाङ्कविया ॥ नानाकादिनागरुनर्तुलायविजय ॥ ५०० ॥ जस्य

36

निष्ठा यमा नि निव कि कि न नी र ४ । सर्व कुच गुज कु री य आ छ सी हो न ४ । पिं ग ष ड क ल क षा द यु क ना
ल व कु क कि क ना ट र ग य ध न क ना र्था का ठि ग स्म र ४ य स ४ ॥ अ ण वे ना व ना द य ध वि धा ड व
दु स् ४ ॥ अ न्या मु द व ना वि धा का उ स य स् ४ । म णु ल स्या ग्वा दि व यु ४ का धि य वि ध य द्वा स् ना न य
म नां उ ना दी नां ग न न य मा यो दि ना के ॥ ग ग व ना द्वा डी जं । य । उं डी ४ छु ४ वि कु ना न न हू हू रू ट रू ट स
ह नि द्वा द यं ॥ सा र्व क मि क ध्या यं म रु ४ ॥ ॥ व ज ना ना म णु ल व ज य ज ना क ष मा द या ग र कू टा
लय स्य ना ना वि धा द्वा ल क म ल स्य क षि का यां च द र ग व नी व ज ना ना सू व ष व ष य च व द्वा मू क

[illegible][illegible]

नामसिद्धदत्तवक्त्रकृष्णवर्णनासांगुलीगणनवाया। उरुनस्यामूर्धमाग्रेवनालिश्वरनिगासांवीसुखरु
नसद्यवाममुखा। आग्रयकोष्ठवक्त्रालिननृभवगुहसूचीसुखरुनसद्यवामरुक्ता। मेअनेवदालिष्यीमाद
किरणनससुखसूचीग्यामनसयज्ञवाष्ठाककूसुमकवकंविआष्ठा। वायुववनालित्तांगीसद्यनकना
स्यामल्लकयज्ञव्याल्लविश्वमीशानवनाहमस्वीनकाशनधनईनकनदया। पूर्वोदिहानयुआ
लागालाकालामत्सलासम्बमूर्धधायथाक्रमसिक्कयोगनकहनिगावजांकृष्णयाक्षरुयवक्षरुद्रुयूग्मा। न
माग्र्युर्विंशतिनक्तमष्ठादिद्वयहिनवारिन्नयोवनाश्रयालंकृमक्षिनसाविदिशानलारुप्रभाविचिष

नीलांबन कैंक का रुनीया मि नउ क वा नाह वकु द्वि युजा ४ सव र्धु वरु नो नूरा ४ सव र्धु व नाह यथ यः
निक निता ४ ॥ दान या ल्या विष्ठा डक सूर्य यालि रु र्धु ४ ॥ अर्या मु विंशति विंश स्ता उ न उ यं य स्या लीट
रु ४ ॥ गानी व्या कूल हा ४ ॥ सव र्धु य द्वा दि दिग्ग रि नी नाम का स्य न त्र ॥ मि ना रा मा य सिद्ध या आ ग्या दि
दिग्ग रि नी नां यै र्का मि ना या वे ना व न ४ ॥ कृष्ण नाम का स्य ४ ॥ यी ना तां न त्र स क्त्वा न क्ता नाम मि ना रा ॥ रु
वि ना नाम मा य सिद्ध नि स्या न ॥ मा नी व्या द्दु र्ज ॥ मां ॥ उं मा नी यै स्वा ह नि द्द द यं ॥ उं मा नी यै हूं सर्व वि
घ्ना म स्ता द य हूं रु र्धु स्वा ह नि सा र्व क मि क म रु ४ ॥ २०० ॥ य के न का म सु ल व ज य ॥ न स्य म धि स म

[illegible]

श्रीगणेशाय नमः ॥ सूर्ययुगलमहामहान्साविलीवज्जपर्यक्षिणी ॥ कृष्णकृष्णसिगन्धकमलसयवाममखीतधादगन्ध
 जामयननाथाधर्मवकुम्भोविजाना ॥ अपनारक्षसमाधिमुद्रा ॥ जयनेदोक्तलेवज्जवानव नदारुयमडा ॥ व
 मगङ्गनीयार्धवापनलच्छाद्यभाक्षिगकलनक्षरायम्विमार्याविष्मद्रसूर्यइधैयर्पकनिषहसूर्ययुगल
 मलाभीनवगीनकानकसीनक्षरमलसयगनवकुम्भुजासखी ॥ सूर्यमारुयमनवज्जखज्जवाममकज्ज
 नीयार्धवापनलच्छाद्यभाक्षिगकलनक्षरायम्विमार्याविष्मद्रसूर्यइधैयर्पकनिषहसूर्ययुगल
 यनीरुनिगारुनिगकृष्णकुम्भसयगनवकुम्भुजासखी ॥ सूर्यमारुयमनवज्जखज्जवाममकज्ज

मेष्याद्याप। नरिहंवापमस्तंरुचत्तकुटावधिघटविध्ववज्जन्ताकध्वजंवाविद्यान्तसिद्धिमीयप
 टज्जग्नयकात्कीकातीककलासीगृहीतंरंखागनेअनकातनातीपीमाकवासीगृहीतवज्जंकिम
 वजावायूयकात्कनीनककवासीगृहीतयर्मुग्धानेभनेमरायमाध्वमारुमासीगृहीतयिगल
 ४३
 ५माध्वमोनेदिउर्जेकमरुणाशनवाप्यमाविचिषजत्तारुजमाभवाचत्तमकुटिन्यठपमिमस्वपिन
 गायथाकुर्मन्तंभावेभाचनाक्षासामिगाराभापमिद्धाक्षीयचत्तंभासिमारावेभाचनमदिगाथापवदि
 दानावेम्भामाजसूर्यध्वजंकुमीवज्यामीवजरुटावजावज्जठपव्वेवमरामरायमीसनादीनीवी

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 अथ श्री कृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री गणेशाय नमः ॥
 अथ श्री कृष्णार्चनम् ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ श्री गणेशाय नमः ॥

स्य क्व वृद्ध नमः कृटमलि नजटा विटपी विचि गुनत्वा रुन लम्वन ४ भां न ४ सिन पी गन क रुवि नय नु
 व कु १ रु रुज ४ सव वामा र्या ध न सव ज वा ध गी म डा स्य ना र्या ध न धा न म डा द डि ल र्या म ऊ मा ला म
 न ध ना वामा र्या क क वा य रु म अथ वा यं मु के क म ख ४ स व ऊ वा ध गी म डा रु रु ऊ द य ४ वाम व ऊ म
 रु रु ऊ न्या इ लि ना र्या द डि ल वे ऊ म रि ना गु रु ल स गि वा ध गी म डा १ पू र्व सिन द ल स व व जी नी सां
 स व न प रु मु क न क व ऊ वा म न न ऊ नी पा म न्द धा ना १ द डि ल न त व जी पी ना स व न प रु मु क
 व ऊ मि र व न त वि रु नी ॥ वाम न न ऊ य नी ग य धि म ध म व जी न का प रु मु वि व ऊ क म रु द ल क

४४

म लं सिन न क स व न वि रु ना वाम न प र्म ॥ उ रु न क म व जी रु वि ना स व न प रु म थ ग न व र्म द्वा न म
 म वि क वि म्भ व ऊ ध न नी वाम न न ऊ य नी न न ४ प र्म र्म नि मि द नी डा प वि वि म्भ प र्म स प क न ४
 र्म व ऊ प र्म कि नी ल ४ स व क न ल म धा रु र्म ना नी ल प रु मु क व ऊ व ल्वा रु र्म र्म रि न यं क र्म न वाम रु र्म
 म रु न म रु त्त ऊ रु य य न १ पू र्व द ल व ऊ स ल ४ सिन ४ स व क न म धा रु र्म रु य क र्म त र्म ग न व र्म वाम
 व ऊ म रु को ट रु या स ग र्म र्म वि रु ना ४ द डि ल व ऊ ना ऊ पी ना ४ स व रु व ऊ रु ल ना क र्म र्म रि न
 र्म वाम न पा म रु रु रु ऊ द य रु र्म क र्म ना क र्म रि न यं क र्म नि नि क र्म रि न ॥ उ रु न व ऊ ना म न क

84

दयावजाव अयय का दवगायथा कास्व कर्त्ति कासुद लेषच आसना १ सूर्यपुला १ य व ग थ ग न सा १ न्या
 अन्या एव न्या विंश दवना १ सूर्यपय कानिष लु १ ॥ ० ॥ रु र ग यान वज्र धा गु वे लाचन १ सूर्यविषु दधम
 गुह्यनामा सा र वज्र सत्त नमदि न १ आदर्श हनादि स्वराजाना मे श्री ह्या दिव गुह्य धा ग ना ना १ क ल ध व
 वाचन १ सूर्य व यु वज्र सत्ता दिव गुह्य वे वाचन ना सा १ ध प या १ मे गु या दिव गुह्य वजां क म स या की
 स १ ध न ल व यु वज्र सत्ता दिव गुह्य मा ला य ष या र्ग न्ध रु ह्या दिव गुह्य वज्र पा म स द ल र्ग र व स ध म व यु
 वज्र ध म्मा दिव गुह्य गी गा दी य गा न नि त य ला दिव गुह्य वज्र सूर्य चामि ना र १ क म व यु वज्र क म्मा दि

चतुर्लोकसागन्ध्यावजगर्हादिचतुर्लोकजावैरास्यवाभायसिद्धिध्याअष्टास्यनचक्रुटागमवैरास्यपिव
 जांक्रमदयाद्यानयाताव्यसावाध्यायानि००पञ्चाननैवेत्तावनस्यहृदीजंअष्टासर्वतथागममहाय
 गीयवर्त्त००निहृदयं॥३॥वज्रयज्ञं००निवज्रयज्ञसामकुं॥साविकर्मिक॥यकुं॥वज्रमिखना
 दिनकुं॥यथापिदवगासनिर्वैरानमर्कंनदगुविह्वनगोभनीर्कं॥२॥ ॥॥गिवत्ताविमगात्मक
 मंश्वजमनुलेवजप ऊर्वादिकं कूटागमपर्यन्तं प्रथमोक्रमेष्टवजमलतवग॥किंलकुं॥काधाः
 वज्रमानस्यन्या००॥क॥यज्ञ॥वजप ऊर्वाद्यननसमन्वयविविध्यामृजप००॥केनरु॥विश्वकू

४८

लिखवैशंकूटागममितिदिगीय॥यज्ञद्वयपि॥वगवेत्यानगंगंकूटागमवैरास्यनालोसिंहायविविध्यामृ
 जवजसत्यपर्यन्तनिधत्तुंरुगवान्वेनावनस्वरुवाभमंश्वज॥कमनायकनककाकिविचित्रकूस्मत्मासि
 मजगोविचतुयविनाजिन॥पीगनीतमुकुमुलसद्यगववकुं॥षड्रुजादजित्ले॥४॥वज्रवज्रदवाभन॥वामे॥४॥
 ह्यायानमिगायकनीताइधनविविजाल॥४॥स्वाहवज्रधालेधनीसमायत्र॥गस्यपर्वकाष्ठदनीजोयविवि
 ध्याकूर्यइकासातलिगाऊयनसिगनीतानीतमुकुमुलसद्यगववकुं॥मरवाइयुज॥४॥सद्यमध्यांगुल्या
 हदिवज्राकषलेपनावजमृष्टगर्वयागहीगवजपल्लभान्योदजित्ले॥४॥वज्राकूगमवान्॥वामे॥४॥वयाग

धनं विना दत्तं तत्तु यन्निविष्टं सूर्यसत्त्वपर्यकी न च संख्यं ४ पी ग नी त मु क्र म त स र्थं न च व कु गु य ४
 दु ऊ प ध न उ ऊ र्ग स मा धि म ड स वा र्ण न त र व ज्ञा वा मा र्ण क व व ऊ द धा न ४ य प धि म म य न ा य नि वि ष्ठ ४
 न वा व मि ना रु ४ स त्व पर्य की मु क्र ४ मु क्र नी त न क म त स र्थं न च व कु ४ ष दु ऊ वा मे न ना त मा दा य स ग र्व ४ स
 थ न रु दि य श्र वि का ४ य गि र स वा र्ण म ड स ग व ऊ ध वा र वा मा र्ण क व क म लु त र ह न ४ उ रु न ग न ४ य नि वि
 ष्ठ ४ सूर्य ज मा ध सि दि ४ स त्व पर्य की न क व लु न क नी त मु क्र म त स र्थं वा म स र्व ४ ष दु ऊ द्वा र मा व द धा
 न म ड ४ स वा र्ण र व ज्ञ वा मा र्ण क वा कू लो वि रु हि ॥ न भ न तो व ना यी ता स त्व पर्य की ल ष ४ दु ऊ द ति

४२

ले ष न दार य व ऊ म न वा मे रु ऊ नी पा म न स म ऊ नी म ड स ग र्ध न वि द धा ना ॥ आ त्म न य मा म की स त्व पर्य
 कि ली नी लो म नो षं रु स नी ष दु ऊ स र्थं न र य व ऊ वा ल न वा मे रु ऊ नी पा म न वा पा नि य आ ल ॥ ने अ म यो लु न
 मु या ष दु ऊ स र्थं न र य व ऊ म न वा मे ४ य मा ड स ग र्ध न वि द धा नी ॥ त सि मा ड य नी ॥ वा य र्थं ता वा न क
 मा स त्व पर्य की ली ष दु ऊ स र्थं न र य व ऊ म न वा मे रु ऊ न्य त ध न वि ध न नी ॥ द्वि ती य प र य र्थ दि दि इ
 स त्व व जी न त्व व जी ध र्म व जी क र्म व जी य थ क म म डी र्थ दि रि ४ स मा न व लु दु ऊ य धा ४ ॥ किं गु क व ग रु ल ॥
 र वा स त्व व जी न त्व व जी क र्म व जी व न रु नी वि रु हि ध र्म व जी पा म न ने मा न्य च न्दा व ड व लु ष दि म नि मु

जायमानासीं कदिमलमज्जं पडिक्खे न रयं खमं न त्वदामवी जयत्ते पल्लुगदामज्जं नमं कूं भवजं
 पुपगाकारिनयमज्जं सुखं वा मोक्षिनामलिखजं पमं कमलुत्तं पापं वापं भक्तिं वक्तव्यः
 जं न ऊनीं रुद्रघटं हिलुपात्तं पुष्टया नमिगायक ककुदिउनी सुकु ककु करु इत्तं गंवद्वारु
 नीयानवनाय नसनामि मलमखं ल्पनं दकिर्लनीत्तं तत्तुर्किर्कं नृप दंष्ट्र कवात्तवामपीमं
 गहीमाधनो हंसपटाङ्ग सिंहात्तं न ऊनीं मध्यमामध्यपद्वी कलुत्ताका न आवरुत्ता कुरुषो
 न ऊनीयात्तं मलमखं न रयं दित्यस्यामलमज्जं अग्नेर्यो न त्वा कपीगा पडुजा प्राप्तिं नदिनउ

५०

तस्यैष पठधनिनी गार्ज्जत्तासीं मलयभनो रावामासीं न ऊनीं नृषी विप्रगीने मस्यां रुद्रुटी ल्य
 गा पडुजा सवीर्वजदलुवात्तं न वामे रुद्रुनी कमलुत्तं वापान्ति यात्ता वायवी वज्रं खलाउ
 त्तामापडुजा सवीर्वजदलुत्तं खलुत्तं न वामे रुद्रुनीयात्तं वापान्ति रुहिरानुगात्तं तिगा कयवस्य
 द्वा दक्षपि सावनादि दद्यात्तं न वामे रुद्रुनीयात्तं वापान्ति रुहिरानुगात्तं तिगा कयवस्य
 मलुत्तं पर्वस्यां पटिकायां भेद्यथैव वल्लुवात्ता रुद्रुधर्मं दभनामज्जं वनदस्य कनीना
 मनस्यैष नागकं नयत्तं वधनं मरुत्ती न कनूपा निष्ठु इत्तं ययिनि विमलं मधं गन्धरुक्

57

नपापकृपलारिनयीगसर्वलोकगमानिघनिमनिर्गिकनककाकि॥ रुद्रद्वयसंपूठन
यहानारिनयी॥ जालिनीपुलावका॥ वामनात्यलसुसूर्यमनुलक्षाबी॥ सथेनवनद॥ उ
रुनसांचउपुरुषलवल्कु॥ वामनात्यलसुवन्दमनुलक्षाबी॥ दक्षिणनवनद॥ अ
मिनपुलावका॥ रुद्रद्वयनारिलोकककलक्षधाबी॥ गगनगऊ॥ सुवन्दुवाल्कु॥ वामवज्र
मृष्टिगर्वनकशान्यस्य॥ दक्षिणगगनग्रामयन॥ सर्वनिवनवदिवकांभीनील॥ शुक्लीवाव
मनरुस्यभी॥ दक्षिणमैष्टिगर्वन्यांगुष्ठोर्मिस्थोपभूतारिने॥ अमीमैष्ट्यादयावाधिसत्वाध्व

डासनाभ्युदयना ॥ सत्पर्यक्षिलिनेना ॥ यदिगधिपमिवर्हिमरवा ॥ षडुजावासावदस
 माधिमडावासीधनधौलधनितामैकुयस ॥ धावधोनुनसमाधिमडासर्वाभ्यमश्वजादि
 दवताविधियवमुनत्तेवर्लकनाजयामकूटमलिना ॥ ससिचवकु ॥ ४५ ॥ नववससासवा ॥
 पूर्वधानमहिषोपनियमाककककक ॥ षडुजादजिलो ॥ ४६ ॥ जवजभनधन ॥ सपाभवागगड्डी
 लिगयागड्डीयनदिनीयवामनातिजितदया ॥ ४७ ॥ कूर्वंगुननसातुसिगयकजरुधामजुज
 प्रालिजनपवसयेकनमिदिगुजा ॥ मुक्ताहमीयपं वामनवीयधनधौ वामनक ॥ मयादडु

५२

यादिगुजयागवनीतयतथाविध्यक ॥ वमकवाममुजयाविनाजितदजिलया ॥ ४८ ॥ षड्रव ॥ लरुह
 दवानीतय ॥ मरुतमखसादहसीदिनीयंरुवरुहनीयंवागुचतुर्थमरुधावंपकर्मवजदंष्ट्रुषर्ष
 मिचरुंलतजिर्क ॥ अथवातिलरुंलतजिर्क ॥ अथवागिचरुंनीलंमलादिमरुवाभिर्दात्रुलवर्हनीनील
 सीगपीनचकरुनिहोनि ॥ दजिलवाचअपनाजित ॥ ४९ ॥ पीग ॥ ४९ ॥ पीगक ॥ सीगमूलसयवाममख ॥ ४९ ॥ षडुज ॥ स
 योवजगदाभवानवामेरुजनीया ॥ कूर्ववाययविचनी ॥ यमिमरुयगीवाचक ॥ नकनीलसीगमूल
 सयवाममख ॥ ४९ ॥ षडुजसवजदंष्ट्रुदकनीयवाच ॥ वामेरुजनीया ॥ कूर्ववाययविहर्हि ॥ ५० ॥ रुवे ॥

कलाऽपि कृतं भवति वा तस्मिन् कथितं ॥ ५ ॥ एतत्तु नित्यं निमित्तं ॥ ६ ॥ स एव कलावत्तु नित्यं लोकोपमा
 विष्णुः कृतं सूर्यपुत्रातीतं नित्यं गायमा कृतं कलातीतं नापि वक्तव्यं कलापि अगमलु सूर्यं वा कृतं
 पलेव वक्तुं नाश्विष्य च किं धर्मं तु सूर्यं नो कर्तुं श्रीमाया जातं न कुर्वितुं योगनिर्देशं ॥ ७ ॥ मध्याक
 मनिर्देशं तु मन्त्रं वक्तुं श्री धारि च तस्मिन् पञ्चसूर्यं वक्तुं यथा श्री नन्दो वक्तुं श्री पीनं ॥ ८ ॥ पीन
 नीतं तस्मिन् तस्मात्तस्मात् ॥ ९ ॥ तु आद्या कृतं ध्यानं मन्त्रं ॥ १० ॥ सूर्यं कृतं माला मन्त्रं धर्मं ॥ ११ ॥ वक्तुं
 च वापि एतत्तु वक्तुं न पत्न्या कृतं मन्त्रं टीला च नादि च तु द्वितीयादि तया धर्मं दयं ॥ १२ ॥ कथा

गदनं नादिकं नया गायत्री ॥ १३ ॥ पथं गमा लु सूर्यं पथि सूर्यं नाजा ह्यं ॥ १४ ॥ नित्यं कथितं ॥ १५ ॥ विवत्तुं विव
 दपि दवता ॥ १६ ॥ पथि मन्त्रं विनो ॥ १७ ॥ अयं कृतं गुरुन मन्त्रं ॥ १८ ॥ तस्मिन् वक्तुं मन्त्रं श्री दीनी समोय न सारुप्य
 नी कृतं ध्यानं तु सारुप्यं श्री वामया ॥ १९ ॥ सूर्या ॥ २० ॥ नित्यं सूर्यं गायमा कृतं का दन्यापि नेव पुत्रं या न कृतं वक्तुं
 तस्मिन् नयेन स्व कृतं गुरुमि तय न ॥ २१ ॥ रुवे ताव न स्वरा वामे ॥ २२ ॥ वक्तुं ॥ २३ ॥ विवत्तुं धर्मं धर्मं तु श्री ना त्मा स्वरा
 वक्तुं सूर्यं न मन्त्रं ॥ २४ ॥ दर्मं दि ह्यं न स्वरा वा श्री सादि तथ गता ॥ २५ ॥ त्वा ना ताव ना च न मन्त्रं वक्तुं न
 त्मा मन्त्रं सूर्यं वक्तुं मन्त्रं दयं त्वा न दन का धर्मं धर्मं धर्मं न तव वक्ति न त्वा कृतं दया ता दयं धर्मं त्वा न तव

संख्येनाया लु नाधर्मविजिह्व कूटीमहासुमया फादय म्वत्वा ना शमिता रुन (ता ना कर्मवजिवज म्भु स्वता
वजयुगादय म्वत्वा ना शमोयमिद्धिना । म श्र वजस्य द्रु द्वा जं म्भु ४०० निद्र दयमनु ४॥ ३०० म्भु
कूलुलिविद्यानककनं ०० नि स र्व कर्मिकमनु ४॥ ॥ धर्मधातुवागी म्वनमनु लनन कनमनु ल ००
वंवजप ०० तादिशवनायवम् ॥ यमांतका दय ४ का धा ४ पनमनु वज्रमा नन्या ४ वे एमिरुनाति । कूटा
गात्रस्य नाशो विष्वा कर्त्तृकास्ति तसिंहाय विविष्वा म्भु जवत्तम ४०० धा धा वजयय की वाता कर्म मनु
पु ४०० वज्रवत् ०० उनीलाग्र रवी ना वज्रनक्षत्र विष्वा वज्रमाता म्भु कूटाय विप क्व द्वा किनीटि विवि

[illegible]

[illegible]

एमाद्यसिद्धिः ४ ध्वा म अ इ ए ओ वा म न र ल द धि र्नी पी गं ङा कं य द्धि म न कं स ण् ङा नं वा
 म सि र्गं ङा कं । अ इ उ ङा दा कृ (ने) ४ ए नं व ऊ ङा भां कृ ण र ह्य मे र्कृ र्नी य ङा वा य या ण ध नं ४ व
 ऊ क म व ज न ङ व ज य क व ज सं धि रि ४ य नि ष ग ४ । अ ङा ख्या द य ल्प आ ग मा ४ । स वा ह ना य त्रि
 वि ष्व य स स र्ग य व ज य र्कृ नि ष ङा वि नि ष न त्ता ह न त्ता म्ब न्ना न ल म्ब टि ना व ज स त्वा द य मुक्ता
 उ ह्वा ङा ना दि का ण स्तु वि ष्व यं म्ब च द्ध य व ज धा तु म धु ला क स्व नू या ४ । अ ङा यि दि द्वा । ङा ङ्ग स्व यि
 य ङा सि । उ ङा न्य दि का ण स्तु वि ष्व यं म्ब स त्वा य र्ग । ङा (ध्वा) ला व ङा मा र की या धु ना ना ना य धा कृ म र ।

रुधायाकात्याजमिनाराजमायमिद्विसत्रिणा॥यव्वदात्रवजांकुभनकामेनावजांकुधयाहारुदा
 लीटसू॥दक्षिणवज्रयाहा॥यीनावज्रयाहारुगुयत्यालीटसू॥यन्निमवज्रसूटत्रकावज्र॥
 त्वलारुहुजद्रयावेसावयदसू॥उरुनदावजावहा॥भमावज्रवधेनकनद्वयगृहिगत
 जय॥६॥मधुलयदसू॥एगवत्वात्राविष्वाकुसूर्यवृष्टिनाद्विजुजासिन्धुकेवदः
 नासायिरगद्वकेहाभमधुवाइरुनागारुनहा॥अनागरुमधुलाकद्विनीयमधुलय
 विस्यादि॥६॥॥मायुरुगयदकिगंयथाकमेदाद॥रुमयाद्विजेजादकि॥वज्र

जग

धानि॥६॥॥वामेनखसविद्रधना॥गदाविमकिवयोरुमि॥यप्रनकनकयप्रधनापयमदिगात्र
 काविकामधिरुग॥विमनौधुकाहुकजलजधना॥यरोकनीत्रकाविध्यप्रसूर्यमधुलधना
 ॥अर्धिममीमत्रकवधनीलासलधना॥सदृजयादीनासहसूकनयागिनामत्रकमसिधनाअ
 शिमौखिरुमवधयप्रायत्रिययात्रमिनायसकधना॥इनसेमागगधस्यामाविम्वयप्रायत्रिविधः
 वज्रधना॥अवलागत्रवदारावदुसूत्रकयकसूकवजांकिगयकजस्यनालासगर्वीविजनी॥साध

मगीसिगावेभेदिनास्यलधनाधर्मभयायीनाधर्मभयपत्रितप्रहयात्रमिगायस्ककधना।समक
यहामध्याकादित्ववधयप्रापत्रिसम्यक्वाविधयकामिगारुवद्धविधयना।दकिंक्षस्यद्विद
यात्रमिगाद्विउजा४सवीनयिकाभधिरुभावाभनसस्वविद्धधना४यहयात्रमिगान्वधिक
कजद्वया।मयजलयभयात्रमिगानकायप्रसूयउमलुलधना।दानयात्रमिगासिगतकवर्ध
नानाधान्यमर्जीरुका।शीलयात्रमिगासयल्लवाहककूसमसुवककना।आक्रियात्रमिगायी

गासिगाकधना।वीर्ययात्रमिगामजकवर्धनीलस्यलधना।ध्यानयात्रमिगागगनधमासिगा
कुरुका।यहयात्रमिगाकमनीयकनकाकिइयप्रसूयहयात्रमिगायस्ककधना।कनद्वय
नधर्मधर्मवक्रमडा।उयाययात्रमिगायियंशुधमायीनयप्रसूवजरुन।यधिक्षानयात्रमिः
गागीलास्यलवर्धनीलास्यलसूखेधना।वलयात्रमिगात्रकायहयात्रमिगायस्ककधना।
यैहानयात्रमिगाशुया।नानात्रलरुलालंकुनवाविदृजलमाधना।वज्रकर्मयात्रमिगाविधवर्ध
नीलास्यलसूविधवज्रधना।यश्चिमायांदक्षवधियाद्विउजादकिंक्षेनाकाऊरुगा।वामनसग

वसुविद्रुधना॥ नवायवधिनासिगन कवर्धयप्रजागमनिरुसमाधिमडामितायवर्धः
 विमधेना। विरुवधिनासिगन कयवर्धकवधना। यत्रिस्तत्रवधिनायीगाविकामनिध
 ना। कर्मवधिनाहनिगाविध्ववधना। उयपलिवधिनाविध्ववर्धविधिवर्धजागिलना
 हसा। मधिवसिगानरुधमायप्रसूर्यवदुमधुलधना। अधिमूर्किवसिगामधुलगे ५२
 नायियंगुसममरुत्रीधना। यधिवधनवसिगायीगानीसायतुरुसाहानवधिगानीसानीः
 सायतुरुवधना॥ धर्मवधिगासीतनकवर्धुपमरुहउयठरुसा॥ नथगाधनामुयासु

जरुद्विनायातिवाभनवजनहमऊबीधनावर्धवाविद्रुगकनकारासथोनपीनधमरुयः
 वरुसुविकवधना॥ वाभनविनामलीधजायविवकधना॥ उरुनसांदादमधावि। अदि
 गुजा॥ सथोनविध्ववर्जविशाल। वाभनसगर्वसुखविंकरुनधनगुवसुमनीयीगाधन्यम
 ऊबीधना। नलीकानकाविनामलिधुधना। उषीषविजयासिगावउकानिमलिक
 तसरुसा। मानिवीनकलोववर्धुससुगुसधना। यर्धमवनीधमा। मयनपिकुधना। जा
 गुतीमुकाविषयमऊबीधना। अनकमूखीपियंगुधमा। नकाडरुसाइयमहानिधि

कलभरुसास्वनाष्टकाऽङ्गुवावतस्मिन्कमलुत्तधनायहावर्द्धनीसिगानीसायतस्व
 अधनासर्वकमावनयविष्णधनीरुनिगात्रिःकवजांकसीगनककमलधनाअङ्गयज्ञान
 कनधुनकावतकनधुधनासर्ववृद्धधर्माकाधवनीयीगायप्रस्नानावतयटकधनायध
 दाअधर्मायगिसमिगनकावजांकषयाहारनयुजद्वयांदकिहोऽर्थयगिसमिगनमनकव
 सव्यमनगुजायांनलयाहारनयधिममिन्नकियगिसमिगनकाकद्वयेयमाकधं
 त्वसारुजद्वयाउरुनेयगिगानधुगिसमिगनमनकधमात्रिकवजांकिगधध्वः ३०
 १५

गृकनधयाअगयकातलास्यायीगसगर्वकनखीवजद्वयविगुनीनेअगमातावकगोवद
 लनलमातारुजद्वयावायवीगीगावकाहसखांवीलावादयकिनेधननलधमाधुनः
 गकवजवजधलनलुजयग्माधुनाधिमकवयोहमिपुरुगयादवधसर्वविद्विगावला
 रुनलामवनावलमूकटिन्यधमास्याधमाविध्वयप्रमलुतसत्वपर्यकनिषधुध
 नयात्यधपनसूर्यपगाअपिचउरुहनीहनीयमलुतेनमान्यापुरुमिवाधिसत्या
 नगुपद्वेसीपादिकायोसमलुरुधयीनधसवनववयोवामनायतस्वधधनअङ्गयमनि

कमरवा ॥ पूर्वदा नमां दयमा कक ॥ कक मुदी यध्म खच न ॥ ४ यकु ॥ सव न क ॥ कया धस
 नं वामे सु क नी या धं य ध्म वा य क द धा न ॥ मख व न धा नां वि ॥ धय ॥ य व व न ॥ द कि ॥ धय क
 क ॥ यी न व उ म्म ख ॥ म ल म्म खं स ध्म क नं स ध्म उ य धि मं म द नो डं ॥ वाम ध्म कं अथ वे गानि यथा
 कमयी न नील न क रु नि गानि अथ उ जा यं स वे ॥ पा ध व ज व मे बा धा न वामे द य क धं व जं य ध्म
 ध किं वा य द धा न ॥ य धि म य धा क का न क न क व उ व कु ॥ ४ म न नो ड द स ध्म क न स वि
 गानि म्म ल स व य ध्म वाम वानि ॥ अथ वे गानि न कं क य पी न सि गानि अथ उ जा द्या व जं य ध्म

५२

दं स व य व ज व मे पा धा न वामे य ॥ म क नी या ध वा या वि न ॥ न न ग र ति ना क प धि सि ना ॥ उ रु न वि
 धा न क नी नील व गु म्म ख ॥ अथ वा नु गानि नील पी न न क रु नि गानि अथ उ जा सी द्या द्या व ज व ल्ध
 न व ज य ल्ध रु दि ल ॥ क या ल वा लं क ध्म नं वामे सु क नी या धं वा यं य ध्म क द धा ना वि ना य कं य
 सा ति रु ना क मा सि न ॥ ४ म न क नी ल नो ड द स ध्म क न स वि ज या नी ला नील व गु म्म ख म्म ल सं का ध ध्म क न स व
 नो डं य ध्म वी ल न न स वामे वी रु र्म अथ वा नु गानि नील पी न न क सी गानि अथ उ जा द्या व जं य ध्म
 ग र्मां द दि व रु कं का ल म्म डं स व ॥ ४ व म्म क न वा ल न वामे ॥ क ति म या न व पा न्म क न पु र्मा ति रु न

वामपादाका कसरु भव नमस्तु का दक्षिणव न लना वक्षु द्वा मास्तु न ॥ अग्ने च व कृता तान नार्क ॥
 कृ ॥ ४४ ॥ गजवी नयी रस क न ल न सा चि न कृ व व कु ॥ अथ वे गानि नी तसी नयी न न कानि ॥
 स्रु जी सो सं यो व जा नि ग न व कुरु द्वा मे य ल यार् म वा पं र व द्वा म ॥ क य ग का च वि र हं स प ती कं वि
 म मा ती र ना कु म्मा स्ति न ॥ ने म त्वै रु न क व ऊ नी ता ना त व गु र्व द न ॥ म तं नो ड स य प मा रु मा दि न
 प र्थ र कृ ल य नं वा म र्म ग न ॥ अथ वे गानि नी त न क रु नि न गु क्का नि अ स्रु जी र्यं द क्षि ल ॥ प य म
 क व ऊ वा लं न क प र्थ क पा तं वा म र्म द दि क म न क रि का ध न ॥ स य ल य ग का र व द्वा ग द्वा र्थ म हा र न व

५२

व र्म वा ग य ट मि व द धा नं स प ती कं वृ ण लं य हा ती ल्प ना कु म्मा स्ति न ॥ वा य य य न ॥ ४४ ॥ म ॥ ४४ ॥ म
 व गु र्व कृ ॥ म त स को ध र्म ग न स यी नो डं वा म वृ ण म र्म ॥ अ वे गानि रु नि न नी त गु क्का नि म र्म ॥ ४४ ॥ म र्म
 रु नि नं ॥ अ स्रु जी र्म स वि श्व व कृ ति प ग का चि न स यी ना रि ष्ट रि न यी दि गी यं न गि य ना रि न य द्वा र्थ
 र व ज पा लो वा म न र व म रु र्म न वि श्व कृ ति रि ॥ ४४ ॥ किं द लु वा य नि यो ल अ रि ध य हा रि ॥ ४४ ॥ र्म ॥ ४४ ॥
 भव न लो द क्षि ल ने क ने नो लं गि य र्म दि गी य न न गि यी गि च वा मी ने क ने न म धू क न च दि गी य
 न क य क रं व स क वा व स ह्य स्ति न ॥ वा व कृ न र्म र्म की ल उ र्म र व क व रि यी न ॥ व गु र्म र व ४ यी न नी

[illegible][illegible]

नूनं ४८५ ग ४ स फ रू (म) ना ग पा म म रू रू न॥ को वर्णा न च कू व न ४ पी ना ५ कू म ग दा ध न ४ ने म न्नी व
 ष रू न रू ०० म न ४ म न ४ मी ग वि ४ त क पा त पा नि ४ क पा ली ज ठा र्ध व नु ध न ४ स र्प य ह्य पुं दी नि नी
 त क ४ ४ ॥ अ ॥ म र्पा कू ग ५ ग्री न क ४ म व क म लु त्थ न ४ ॥ न म र्पा ना क सा धि पा ने म न नी त ४ म वा न रू
 ४ ख अ र्ध क रू न क न ४ ॥ वा य वां म ग वा य नी ता वा ट प र ध न ग ५ न ५ ५ व गु यु जा ४ स य न पु थ म वि
 र्ध वा म न क्रा दि ग र्वा र प ती क न द्वि गि यं म्बि या लो द्वा र्पा मि न मि क ग व कू ल पु म्म मा क र ल य ४ ॥ ००
 म न स र्म मी प व दि ने म न्या दि म ४ पु र नि क र्म न व क्का द य ४ ॥ ग व र्ध स व क्का पी ग र्ध गु म्म ख म्ब गु र्ध

३५

जा ५ कू स रू ग रू स य न ना र्णी क गा कू लि र्ध लु क म लु त्थ न ४ ॥ ग र्ध वि षू ४ क रू ध गु र्धु ज ४ व कू म
 रू रू न॥ स य वा मा र्णी म्बि क र्गा ज ति र्म दा म न कू ध न र्ध न ४ ॥ व ष र्म रू ध न ४ सी ग ४ म मि क न काः
 कि न ज ठा रू ट म्ब गु र्धु जः मि त मि क गा कू लि मि ४ त क पा त रू न ४ म य न कालि क र्पा न क ष म्ब रू व
 ४ स य र्णी म्बि व ज च वा मा र्णी कू कू ट द ल व द धा ना द्वा र्णी क र्गा क ति ४ ॥ न पि प र्ध व द्वा ली ग न
 र्वा र प ती का ४ ॥ व क्का य नि लु व क्का व न् नू दाय ली नू द व न् वि षू पी वि षू व न् को मा नी कालि क य व
 न् ०० दाय ली ०० द व न् वा ना ही क रू प व क्का नू द व नु र्धु जा स य वा मा र्णी नी दि न म स्य क पा ल ध न

पालकलिकाः सफ कर्मांजलयः स्वस्वपि रुः यधनविद्वयका चतयावाः वमविधिवलियुक्तादवे
 नावनादयोम रुसंवे त्रीः कृष्णः सनद्ध वद्धकववाः स्वज देठ कादिनानापुरुनस यगुकनाः॥
 गनः ५ ५ ५ कृणा ऊरुलिः पुसानि गयश्रीयावऊनि ५ ५ ५ रुद्रु नारि यावपीतसु इद्ध कळ यावदक
 सु इद्ध मरु कयावकु सु ५ ५ ५ की नन ना ऊ त्री नक लगे ना वी ना वादनय न ५ ५ ५ य चरिा स्वाग धर्वन ५ ५ ५
 ऊ ५ ५ पी ना वी ना वादर्यानिः सर्वाथे सिद्धा विद्या धन ना ऊ त्री न ५ ५ ५ कसु ममा ला रुसा ५ ५ ५ पूरु रु
 जानीतः ५ ५ ५ मानि रु ५ ५ ५ पी न ५ ५ ५ धन ना न क ५ ५ ५ वे च व न पी न ५ ५ ५ वि वि कृ लु लि न क ५ ५ ५ क नि मा लि ५ ५ ५ म ५ ५ ५

मखेत् पीनः वनेन्दपीनः। पूर्णरुद्रादयोऽङ्गाधियावीर्यपल्लवसेन कृतस्तुतस्य ननकना॥
 निमीपीनाङ्गीद्वयधामिनीसम्पदा॥ अम्बिनीसिगाहनीरुद्रिनाकरिकाः। आमात्रादिनी
 नकः। गोत्रासुगमिनाकृष्णः। आद्रापीनापुनर्वसुपीनापृष्यः। आमाः। अक्षयः। उक्ताः। मद्याः।
 पीनापृष्यः। उनीपिर्यगुः। आमाः। उरुवराहनीरुद्रिनाः। रुद्रासिनाः। विगाहनीः। स्वासिपी
 नाविष्वाकाः। अन्नाधामिनाः। अक्षयः। पीनामूलः। पीनापृष्यः। स्वाधः। उरुवराधः।
 उरुवराधः। उरुवराधः। उरुवराधः। उरुवराधः। उरुवराधः। उरुवराधः। उरुवराधः। उरुवराधः।

पदा पीता नवनी कुलमेता अहि जिहस्यामा अग्नि न्यादयो दद्युश्च तनकश्च तीर्थनिधानाश्च
ना ऊरु तयश्च अनीपिदवो विमानस्य विहंयाश्च नगाश्च मृकाया दवताश्च यज्ञस्थायुश्च कस्यपि मित्र
पवित्रा नो भवयथा योगविविग्वमुब्रता यत्तं कृणारुगवर्कमनुत्तमं नमस्य नो जास्तानमस्ववि
नदिग्मस्वाश्च यथादि द्वा नष्टवजां कुम्भादयो द्वा नष्टवजा लायथा गार्मस्तुत्तमं नमस्य नो जास्तानमस्ववि
वनात्तामश्च यथादि द्वा नष्टवजां कुम्भादयो द्वा नष्टवजा लायथा गार्मस्तुत्तमं नमस्य नो जास्तानमस्ववि
नष्टवजा लायथा गार्मस्तुत्तमं नमस्य नो जास्तानमस्ववि

मयीवर्जकूलाद्वा दमरुमयीधर्मायगिसमिन्तुलाश्च समन्त एकादयश्चत्वारो दमकाधाः। यथा
धूपापूर्वदिक्स्थितं दवनाश्चक्राश्च सारवज्रनलोदयश्चत्वारो वज्रपाशाश्च दमपात्रमिनाञ्च यथा
गिसमिन्तुला लोमगनगञ्जदयश्चत्वारो धूपाग्नादक्रान्तिदिग्जं दवनाश्च नक्षत्रसंख्येन वज्रधर्मा
दयश्चत्वारो वज्रपाशाश्च दमकाधाश्च दैवपूर्वमिदं यथा निबन्धेन गिसमिन्तुला लोमकादयश्च
त्वारो दीपावसापमिदं गवस्ति नदवनाश्च मिनाश्च सारवज्रकम्पादयश्चत्वारो वज्रावकाश्च दम
काश्च ४ यथा गिरानसमिन्तुला मिनाश्च यथा दयश्चत्वारो गन्धार्थाश्च दैवज्जनाश्च भाद्रपदि

नामदिनाधाम इ धावस्य हृदि जंम धा अं आ ४ सर्वं न धा ग ना ह दय रू रू न उं हं को ४ र ग वान् हानम
 रि वागीध नम ह वा व सर्व धर्म नों ग ग नाम त स प वि भु ध धर्म धि तु हान गरु आ ४ ॥ ॐ मि ह दय म
 नु ४ ॥ उं ज म ग क लु ति वि द्या न क हं ॥ ॐ मि म ग क लु ल म नु ४ स र्व कर्मिक ४ ४ ॥ ० ॥ इ र्ज मि य
 नि आ ध न म लु ले व क य ४ न स्या ए न न वा य ह त न ज ले वी स म नू य नि कू ण ग न न स्य म त्थ अ र्ण
 त न म लु ले पी न म ह न व क नी ले व जा व ती व त यि र्ग क षि त्थ ह न व क नी ल मा ह ॥ अ न्य स्य स व दी
 नी ला प र्व मा नं भु र्द कि ल क र्प प ष्चि म न कं म ह नं रु नि न मि त्या ह ॥ व क स्य व द्या वि ध न नो ज स र्पि

हा प वि धी भा क र्मि हार ग वान् म ह वे ला व न ४ स व र्त् व र्त् ध न ध र्म व क म द्रा ४ यं वी न व जी उ षी
 ष ४ भु क्ता रू ज स र्ग म द्रा ४ द कि ल्प न न लो षी षा नी ला व न द म द ४ प ष्चि मा न य शो षी षा न का ध्या न म द
 यान्ति न ४ ॥ उ रू ना न वि ल्प षी षा रु नि ता ४ रु य ष द ४ ॥ अ ल्प या न न जा षी ष ४ शि न व क मि भु व र्त् ४
 सूर्य रू द कि ल यालि ४ क टि रू वा म क न ४ ॥ नै अ स्या न ध ज षी षा न क मि भु क रू वि ना म लि ध ज ध न ४ क न
 र्वा वा य द्या न नी क्ता षी षा न रु ४ ॥ भा द कि ल यालि ना क यार्थ वि द्या ल्प वा म न प रू कं ॥ ॐ शी षा ना न क
 षी ष ४ भु या नु जा र्ण क रु वि द्या ल ध व जा व ती ना व हि ना त्न या दिको ल ष ल्प स्या मा ला गी ना न त्या ४

सीनपीगनकविधवर्द्धुद्विउजा॥ यदिषुद्धानस्यवामकोवाधिसखासथवको नययर्वस्यपटिकाय
 मेयय॥ पीग॥ सयकनेलनागकभनकसर्मवामनकुलीन्दधान॥ अभाघदभीपीत॥ भनगभाऊ
 रुदक्रियपालि॥ कटिस्तुवाममसि अयाय ऊरु॥ धन॥ अकृमरुत्कनद्यय॥ सर्व॥ अकनमानिद्यान
 मनि॥ सिनपीगमिमुवर्द्धुद्विउजा॥ सयकन॥ कटिस्तुवाममसि धादक्रियस्यंगन्यरुसीसिनस्याम॥ स
 धनगभगधन॥ कटिस्तुवाममसि धसूनक्रम॥ गुय॥ सर्वनामिधन॥ कटिस्तुवाममसि॥ गगनग
 ऊरु॥ सिनपीग॥ सयनपन्नस्तुधर्मगअधन॥ कटिस्तुवामरुस्तु॥ हानकतुनील॥ विनामनिधन

१०

रुत्तदक्रियपालि॥ कटिस्तुवाममसि॥ पश्चिमायामरुत्तुय॥ गुयीमकूटापर्यम नकलभरुत्तुः
 यकन॥ कटिस्तुवाममसि॥ वन्द्युत्तु॥ गुय॥ सयनपन्नस्तुवन्द्यविम्वविज्ञान॥ कटिस्तुवाममसि॥ रु
 डपाल॥ गुय॥ सयनस्तुत्तुवन्द्यवकीकटिस्तुवाममसि॥ जालिनिपुण॥ वक॥ सयनवजय ऊरुविः
 उगकटिस्तुवाममसि॥ उरुवस्यवजगर्शनीलसिग॥ सयनसवजनीलात्तुवधन॥ कटिस्तुवाम
 मसि॥ अऊयमनि॥ सिगारुस्तुत्तुनाम नकलमधनी॥ पतिगनकूटावक॥ सयनादस्तुवले
 मकूटधनीकनिस्तुवाममसि॥ समनरुद॥ सवर्द्धुवर्द्धुवत्तुमऊरुविरुदक्रियपालि॥ कनिस्तुवा

ममष्टिः ममुल्लस्य गन्धादिषु यस्याध्यायं आसितकुरु न कुरु विना ४ यस्यादिरुत्तु ज्ञानया ४ पर्वदा
 न वजां कुरु ४ सि गारु सुदयनी कुरु धन ४ दक्षिण वजाया मानी लो गुजा सौ पा मरुत्तु पश्चिम वजा सु
 ठानक ४ कनो सीवज ४ सु लाधन ४ उरु न वजा वे ला रु वि ना रु सा सीवज घ ४ धन ४ न ना सु फः
 ति म द पि रु व ना वि वि रु व रु न हान पथा न ह म कृ टि न्या दि न या दि गु जा वि द्वा म्हा रु व रु व स स ल प ॥ १२
 र्य क न नि ष रु ४ ॥ रु म रु व नी च न ४ सा रु वे ला व न न म रु दि ना म रु वे ला व न रु ने व जा ष्ट पा द य ४
 च ला रु ४ व जा ष्ट ष ल प र्श दि ग रि का ल रु द व ना ४ न त्रा ष्ट ष ल द क्षि ण दि रु ने म ति की ल रु ४ प द्या ष्ट

ष ल पश्चिम दि ग वा य व की ल रु ४ वि द्वा ष्ट ष ल रु न दि मि म्हा न की ल रु ४ रु वा क्र म लु ल स द
 व ना रु न प टि को या म रु विं म ति व रु म लु ल नि ष रु दि नि त रु क रु र्दि ष्ट ष ४ म वा धि स ल न्या
 शान म र्ग ग ४ क वि ल रु न रु म लु ल मि ति न रु व व ना द्य क रु ठ म न रु ला रु न रु दि ती र्य कू टा म न रु मा
 रु ४ क र्मि रु म रु व नी च ना द या न व न था ग ना ४ सा ष्ट षा रि रु व न धा नि न ४ रु रु य द्या व ली य नि क
 वि ग व रु वा रु रु रु न रु म नी दि म मा न रु द क्षि णा व रु न नी ल क रु दि न्या रु ४ ग रु म नी र्वा रु ष रु नी
 ल क रु ४ रु क्री य रु य वि नी स रु य रु व रु व रु द म रु वा व रु म या रु म रु ल रु व रु रु रु ग रु रु वि रु रु रु रु ४

सयथागदावजेवामथा॥४॥खवकुवजकुमावियुविवसुवकुवेलेनिवि॥४॥मयूनवजुय॥४॥
षष्मखानक॥४॥सयथा॥४॥किवजवामथा॥४॥कुक्कटावजुय॥४॥वजकोमावीवजुय॥४॥वग॥४॥रुसमा
नवज॥४॥पीगधुमख॥४॥सयथा॥४॥वजाकुसुगुवामथादलुकमलुलुनीत॥४॥वज॥४॥किवुक्कोवग॥४॥
नषदकदनीलुव॥४॥वजायध॥४॥पीनालतिनासनसयकननवज॥४॥दधान॥४॥कठिन्यरुवामरुः॥४॥
नवज॥४॥वजम॥४॥खीद्वीवजायधवग॥४॥सफाधन॥४॥वजकुलुतिका॥४॥वजकु॥४॥सयकनयम॥४॥वामयम॥४॥स
यमलुलुवजामगवजकुलुतिवग॥४॥रुसवजुय॥४॥काध॥४॥सयरुसवज॥४॥वामयम॥४॥वज॥४॥वजकानिव

१२

जुय॥४॥रवग॥४॥०॥४॥मनवजयिजुलुका॥४॥वजकुधसय॥४॥गुजवज॥४॥वामनमानुषमादाय॥४॥रुयनिक॥४॥वजम॥४॥
ताववजयिजुलुवग॥४॥पधवज॥४॥सोमा॥४॥काध॥४॥पीग॥४॥नतधन॥४॥वज॥४॥सोमा॥४॥वज॥४॥सोमा॥४॥वग॥४॥रुकवज॥४॥गुनका
॥४॥लोना॥४॥जुसुगुकमलुलुधन॥४॥गुनवजावजगुनविव॥४॥पधवज॥४॥कुकाध॥४॥गुका॥४॥जुसुगुकमलुलु
ग॥४॥वज॥४॥कुकावज॥४॥कुवग॥४॥ककुपवज॥४॥दलुकोध॥४॥सयवज॥४॥वामदलु॥४॥दलुवजागीदलुवजवग॥४॥
वजना॥४॥जका॥४॥वजकुसुव॥४॥सूर्यमलुलुलुग॥४॥सयगनकन॥४॥वजासुनीवजना॥४॥वज॥४॥वजकगुः
काध॥४॥कष॥४॥वजनागया॥४॥धन॥४॥वजनागीवजकगुवग॥४॥नवगुधयवज॥४॥सोमन॥४॥कन॥४॥कलिः

वीनी॥ मुखे कप गनी नीला सुवर्ज वामस माङ्गनी ॥ सीमा भ्रम सुवर्ज वामन स्वर्ज खट्क ध्वजा ॥
 श्री लोचने वस्त्र सुवर्ज वामपद्मे ॥ सनख नीसिगा सुवर्ज वामवी ॥ सिंह उर्ज भ्रमा सुवर्ज ध्वज चक्र
 वामपा ॥ पदि ध्वज ॥ अङ्गनी लक ॥ दिदव गानी दक्षिण कनेष पथ सर र्व वजानि विभ्रिका निवदि
 न्या ॥ यस्मिन्नागवज्र समीप पथो सुवर्ज वस्त्र सुवर्ज मन्त्र कल मधना ॥ असूना भ्रमा नावर्ज सु
 कवचा ॥ वज्र ध्वजा ॥ सरु लम ध्वजा ॥ नाग भ्रम समलि रु ॥ सहा सी ॥ ऊरु तयय ॥ वक्र वा ॥ सुवा ॥ अ
 त्मणा दिग्भिः अविष्ठा दिन वक्रा ॥ नेम हा य न गति रु ॥ वाय र्वा गिर्य ॥ ४२ ॥ नेम ना मनः प गति रु

१४

१४

४१ अर्थ कर्म गता कृत वन्याय न लिखित ॥ अन्य सुवर्ज रेव वस्त्र समीप पथो यका भ्रमा वक्र काल सुसमी
 प ॥ सुना ॥ र्वादि कमाव ॥ मलु ले भ्रम दिव ॥ ४३ मून मून मलु मून य स्वा ॥ ४४ निम कु धा रु दय म
 कुम्भार्य ॥ ४५ नेम एग व न सुवर्ज र्ज नि प वि ॥ अधन वा जाय न थ ग ना र्थ र्थ न सम्य र्थ व द्वाय ॥ गद्य धा ॥ ४६
 धन ॥ अधन सर्व या प वि ॥ अधन ॥ ध्वजि ॥ ध्वज सर्व क मा वि न ॥ वि ॥ ध्वज र्ज नि मा ला म नु ॥ वक्रा व म सु
 ॥ ४७ सर्व वि सर्व या प गति ग रु नि वि ॥ अध नि ॥ ४८ रु डि नि म नु ॥ सार्व क र्मिक ॥ ४९ वक्र य र्ज ॥ ५०
 न्य ॥ ॥ रु न ॥ म न म लु त वक्र य र्ज न स्वा र्थ न म न्त्र प नि वि ॥ ध्व प क र्ज क लु क र्मि न वि ॥ ध्व क

लिखयेद्यपि किये गमन ह्यना रोग जना जाय विगजन हि न बावि ॥ १ ॥ वा जव कुअप नाजि न सी गव कुमः
 द्वे च आ के कयि लज ठाम कूट मम कं पथे कपा लघिन गुं दं सु क नाति नं गु नित बा उ य क्षप वी गि नी बा प
 व मा र्द्धा न म न व गु र्ज स या र्णी क र्त्तु म न ध नं क पा ल वि भू ल र द्वा म द य नो र्द य र्था सी ट ना कु नो र्ग न
 ज म न म ह नो डानी ल ॥ प थ क पा र्त्ता क म कूट ॥ य व र ग थ ग ग म कूट पि ज्ञ भ र्द्ध व द्ध के नी नी ल व म्मा व
 न ग न र्द सु क ला न व कु र क न ग य ॥ सा द ह स म्भ गु र्ज आ द कि ल न नी ल क ना ल व ज म्मा ल य न वा म
 न पा म ग र्ज नी ध ना ह र्णी मा व द्ध म्मा म्मा गु र्ज ना मि का द य व सु क र्त्त व य रु र्ज नी द य क नि र्ध म थ म र्त्त व

अथ कुष न वा क म दि ल न ना क ॥ अथ रि र्ज ग ना जे वि ना जि ग ॥ ग गु मि ना व र्द्ध नं क कूट को नी ल ॥ गी
 वा र्द्ध नं ग ज को न क ॥ न नो प न नो क र्त्तु कूट ल पी ना व क र्त्त ग न नी यो ल व म्मा सु ग म न न ॥ ४ ॥ सि न ॥ क टि
 सूर्य वा सू की लु क ॥ म्मा गु ज या ॥ क य न ॥ कू ल क ॥ या ना व ग व ल्भु प न गु ज या ॥ क य न ॥ र्द्ध य र्था लो ध व ल
 ॥ नो य ना य म्मा ल य म्मा न क र्त्त व ॥ प र्द्ध का र्द्ध व र्द्ध सूर्य म्मा र्द्ध व ॥ उ र्द्ध पि ज क पा नी र्द्ध म व ल्भु ॥ ४ ॥
 आ द व द्वा क र्त्त वा वे ग यी या उ य क्षप वी गी व गु र्ज ॥ स या र्णी क र्त्तु म न ॥ वा मा र्णी क पा ल वि भू ल द
 ध न ॥ द कि ल ग न ॥ सूर्य वि र्द्ध ॥ क र्त्त व क म कूटि स या र्णी क म न ग र्द्ध र्द्ध मा र्णी व क र्त्त ध न ॥ ४ ॥ प

ध्विमहं सव चवृत्तासिगधुर्मख ४१ स्यात्सामक्रमा लोके गदले र द्वा मा र्थापन्नकमलुत्तधन ४२ उरु नम
 यनसूर्यकोलिकया नकमि वी न ४३ सथन वामन वामन ग किं विरुलि ४४ उभानमभिव कव च ग नैयमि
 ४५ सेना गजासामि नवा ४६ वे च ल धन ४७ वगु उडा स्या र्थामल कय भु वामा र्थापि ४८ ल कया त विरुलि ४९
 ॥ आत्मयसूर्यमलुत्त आदि लो नक ४९ सथन वामन वस नोऊरु सूर्यमलुत्त रु नेम स थ च थरु सूर्य च उ
 ना ४९ नक कृष्ण कृत्त र्थी (मध्व के लो कल त्थि ज स व द्धु र्म ४९ ५० दं धु वि दानि गा स ४९ क नो र्थी रु न
 व उ सूर्य य कृत्त जति ४९ वा य थ व च न न्दी पी गान रु न म ध्व च ल धन नो वा द य द्वा प वी नी स थ न नो र्थी उ म न

वि ४९ ल रु ग ॥ दि नी य पृष्ठ य र्थी नि धि व च ४९ ५० क्रा द य ऊ र लि न प न्न प र्था रु ग ॥ द क्रि ल र्थी व च वि ता
 रु मा न का ध पृष्ठ ध लान रु नी ॥ प ध्वि मा या च र्ध ४९ ५१ न का दी प रु सा ल रु ल र्थी व च उ मा पी ग
 म ध्वि र्थी का न ल रु न वें प नी ग रु सा न रु नी ॥ आ ल्ने र्थी व च न ल ग न्ध रु सा ॥ नै अ र्थी व च स न स गी ५२
 मा वी ला वा द य कि वा य र्था व च स न स न्दी रु रु न ल मा ला धा वि नी ५३ न्ना मि द्वा वा रु नी पी गान
 र्थी वि ४९ क व जा क क न की स त या ॥ रु नी य पृष्ठ य र्थी मि न वा व न व च रु सा ४९ ५४ पी गान ल म कृ ति
 स थ न रु य द्वा वाम न व जा य ४९ ५५ द क्रि ल र्थी मि ही ष सूर्य य म कृ रु मु दी का पि ला ४९ ५६ ५७ ५८ ५९

नवसुं सुवोनकया लीकिगदलुरु दामे ४ सगर्जनीया मधन ४ पश्चिमाया उजगव च वन ४ सित
 ४ सफरु ल्मा वामन नागपा मरु न ४ मथन व न ४ उरु न सी यडा न ४ क थन ४ पी न ४ पी नातः
 म्वाद ना व लम कूटि सुथि द्वा सी ग दोन कू लिं ध त ४ अ लन यो क ग सूर्य अग्नी न क वि ज ठा क र क पिः
 त ४ क ग म ग त म्वा द न मि य लु ४ य ह य वी नी स वा सी व न ४ क स ग ध ना वा मा सी वि द लु क म लु त र
 न ४ न म सी व गा उ सूर्य ने म न ४ क स स थ न त्व म वा म न मां स प र्क क या त द धान ४ क पि ता रु वि क म
 ४ ४ वा य यां मृ ग डो वा ग नी त सि वी व त ४ क ना सी वा न पा म र न ४ ने म नी रुं स व च व ४ मृ ग वा म
 ४ स

नन

क म द रु व ड म लु तं सु व न व न ४ ॥ श्री म न म्ध म रु ध व न व न ४ व गु र्थ प र्क प र्क सी वि लो सी रु ध ज धा वि
 ली सी ना सिं रु ध ४ रु ग ॥ द क्रि ल सी मि नो वि रु नी न का ४ क म धा वि नी ॥ प श्चि मा या मि न्द म लु य न न नी
 सी मा ध न वी ल रु सा उ रु न सी म नि नि स न रु नि ली न क वि ना म वि ध ४ रु ग ॥ ने म न्या मि नो व न रु नि
 ली पी गा द रु न स थ स प र्क उ र लि ४ अ ल न यो म ध रु न न ल म्ध नी पी गा ध प क ट रु सा ने म त्या मि
 नो रु ष ली पी गा ग म्ध म रु सा वा य सी व ड ज ग सा ति नी पी गा दी प ज रु रु सा अ ग स र्व न वी न्द वा धि
 वि ष प म रु ४ स र्व द व गा ४ स त्व प र्क कि ल्मा वि वि य व रु न त्ना र्क गा या सा न वि ल म व व न न अ ग च क

मसकल (म) शो ४। रुगवनाह दी जं हं हं वज रु उ गि ह द यं ॥ उं रु न ज म न रु ना धि य नि अ ऊ रा य कि
 नी टि न स र्व रु ग य ग पि म वा न सा ध य हं रु उ गि वा ॥ अ र्य भ व म नु क स र्व क मि का वि द्या न क म
 ती वा ॥ ॥ य व र्ज क म लु त व ज रु म्या दि कं कू टा म ल य र्य क य थ म म इ र व र्ज म नु त ० व न ग म
 ध कू टा म न स म ल्थ रु ग वा न व र्ज क ॥ पू र्वा दि दा न षू गो र्वा द य नि म ना दि का ल ष प क स्या द य ४
 ॥ ग रु गो नी सि गा ना श य ना क म धा नि नी यो नी पी ना पा म ध ना ॥ व रु ती न का रु ऊ रा र्वा ह रु न ॥ यः
 स नी रु नि गा व रु य ल ध ना ॥ पू र्क सी नी ता वा धि वि रु य ट रु सा ॥ ध र्व नी सी ना म न ध ना ॥ व रु ती नी

१४

ला व नि क रु रु ग ॥ अ मि नी वि ध व रु म रु ध ज प ना का ध रु ॥ प र्व कू टा म न स म ल्थ व उ ष व र्ज क
 म को स म ल म र्व क र्वा म न कं ल षा स्या नि नी ता नि ॥ द कि ली ष क पा ल ष म य न म हि ष म क मी न ग रु कं
 म ल ष ना ग रु सा ४ ॥ वा मा ष क या ल ष म धा क षी रु ता रु ता ऊ र नां ल म षि क स म नी ग नी वा न क रु ॥ प
 र्वा दि दा न ल्थ म ना दि का ल ष य थ क म द य ४ ॥ ग रु स द सा नी ता स र्व म रु सा या मि नी पी ना पा म रु न
 ॥ वा गु ना न क वा गु न जा त धा नि नी रु नि गा रु क म रु सा ॥ य षा रु क षा क ल लु ध ना ॥ ध या क ष ध प
 क रु ध ना ॥ दी या पी ना दी य य मि रु न ॥ ग धा पी ना पी न ग न्ध य लु म र्व रु सा ॥ द कि ल म लु त स म ल्थ न ल

॥ वामसिर्गं लषानि नीतानि । स्वकलषवृद्धं हस्यनिर्कं तु नाहमङ्गत्तु कुम्भनेभ्यर्वा विष्णुवः ॥ वामसि
 ष्टवृक्षवृक्षकामदववत्तु हृदङ्गनकवमविश्ववत्तु यथैधनन्द ॥ पाथ ॥ पृष्ठादि द्वा नेष्टी भानादिष्व
 दवना ॥ गयगातिका सिगा । गातिका धना ॥ कृष्णीपीगा कृष्णिका रुक्मा । कपाठवका कपाठधना ॥ पि
 ठधनिती कृष्णकना र्णाको लुपटी वियगी । ताच नासिगा वकधना । मामकी नीता वज्ररुक्मा । पाथुना वका ६०
 पद्मपाणि ॥ गाना रुनिगानी तास्य सधनिती ॥ मरु कूटा गभनस्य द्वा नेष्टी भानादिष्व लोयो दय ॥ पृष्
 णा दय ॥ यथा गवत् ॥ ०२ रुवज्जक अस्मन्नवर्धु सैस्मन्नवकुमुजादिरिन्न वामक रुक्म मनुस्यथा धातु म

कुज रुवज्ज अर्लिगिगने नास्मापि गथा गवकादिज कामुवत्ता वज्जक वि लषस्थानो व लषे वज्जक समा
 ॥ अर्लिजि गदव रुष्णीयथा कुर्म तावना मां मकी पाथुना गा नासिगयी गवकरु निगा ॥ कर्लि गर्जनीये क
 कुज दया ॥ पृष्ठापिठ का ॥ पुत्यकं पृष्ठा वृक्षम कर्लि ॥ सर्थे वृक्ष कूटा वृक्ष दद्यात्त ग्ना वक वकुल विन गद
 कृकना लेकवकुदि कुज कल हृद कपिल कृकला सलाह नट रूप पृष्ठा कपास गला वतस्मिन् कुक नृमः
 माता पृष्ठा मद्रा रुषिगा विष्णु पद्म मर्त्ये पृष्ठा लीट न नृत्त कवि लषा वव न द्वा दि वाम मर्त्ये गर्जना
 गर्जना ॥ अर्लिजि गदवीना कुनय थ गभसर्न लोयो दय ॥ नार्थे वृक्ष कूटा पद्म वृक्ष म कूट वने

अग्नितमविप्रितः शिवस्तु नमिगियज्ञा नर्न लोका लोयादियभ्वज्जका लिमखाः ॥ अन्यदयस्वस्वाधिय
 हरिमखाः ॥ हवजस्यमर्द्धवजरु द्दज्जका नकोलदवीनी कुविरु ॥ १ ॥ भवगनले भामिगारु ॥ १ ॥ भवग
 सवकुधन ॥ १ ॥ भवकु क्क दोनकोलदवीनी विरु नत्तामिगारुमायसिद्धय ॥ १ ॥ वजसूर्यस्य नत्तनत्तया विम्वि
 नामनिभ्वदोनकोलदवीनी कायविरुमिगारुमायसिद्धय ॥ १ ॥ पद्मनर्तु ॥ १ ॥ भवस्य पद्मभवा वजपद्म
 दानकोलदवीनी कायनत्तामिगारुमायसिद्धय ॥ १ ॥ पद्ममाभ्यस्य स्वपद्म ॥ १ ॥ वज्रभ्वदोनकोलदवीनी कायः
 विरुमिगारुमायसिद्धय ॥ १ ॥ वाक्क लोयादीनी पूर्ववत् ॥ वज्जका नीयथा कर्म द्दवी जानि ॥ १ ॥ उं जं अ

४०॥ रुद्रयमनुक्तु ॥ ॐ धनं धनं धनं यथा धनं यमर्धं मर्धं वज्रधृक् कुरु स्वाहा ॥ ॐ गायत्र्यं नमः ॥ गायत्र्यं
 क्रुतिजिनक्रिकर्तुं कुरु स्वाहा ॥ ॐ वज्रं यमं यमं विधमनसमयस्त्वमर्धं न तदधृक् कर्तुं कुरु स्वाहा ॥ ॐ वज्रं
 मसमयस्त्वं कुरु कुरु आनातिकुरु स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं कुरु स्वाहा ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 वृक्षानामो वज्रमहाकोक्षयमहोदंष्ट्रं कुरु स्वाहा ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 धीनकस्यमनु ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥
 नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥ ॐ नमः ॥

[illegible]

सुखगनकनकादि नंदवी क ४ सा सुखजगर्जनी कोयलसुखकना नर ४ पर्यु कया लरु दालें गितवा
मकुजा न क ४ हान जकिनी वरु धा से धनी गित वरु वा नाही गित वा घन नाम ध्या ॥ अ ४ पर्यु दिगादि दक्षिण
वरु न वरु जकादी नां पक्षनी न्याम सुख निवा नाभां दुषणिम लुतं पर्यु दि द्वा न प वामा वरु ना ग्यादि
विदि द्वा दक्षिण वरु न वरु सुख विदि द्वा यथा कर्म जकिनी तामा खलु ना हानु पि न्या नी लपी गन कः
हति ना जाली प ४ ॥ दान वरु लु कया ल म हार क का ल वि कट दी पुन ४ क ४ सुख ज घ ४ ॥ ह ४ स्ना र्थी थ व
लु व लु की प ४ व नी म ह ना ४ ॥ रु ४ म ४ व ४ ॥ अ लें गित ४ ॥ ग ना वे लें व न क ४ ग न स्य म ४ सि ४ ॥

उयनि ४॥ अभाघसिद्धि कृष्णग नस्यम ल्धग न्णप निविध्व अकस्यस्य रउरुदिव कययकी विध्व अक
 रुनिग ४ स्यवामदृष्टा र्वा विध्व वज विध्व वज कयध्वि ना र्वा मा ति गिग रु निग विध्व अकि नी क ४॥ वा
 नष र्वा कप मन्त्र स्य न वे वा न वज स र्वा रु निग विध्व वज विध्व के वे य ल्ध र्वा न क ना र्वा सू वी न
 महा वला व क व र्हि नी महा विर्या धूम धूम न व र्वा उ त्ता म य नि ४ व गु वी स गि वी न अ सी र्वा ४॥ ००० ४८
 अकि न्या दिव ग शा वा मन क पार्त्त र्वा ग क द कि ल न उ म न वि र्वा ४॥ ए न अकि न्या व लु दी नी वी
 य ग द कि ल क न व ज ग र्ज नी क र्वा व ज अकि न्या वी न म र्वा दी ना क र्वा क ग र्ज नी व न व त अकि न्या ने ना व

र्वा दी नी व स न व ग र्ज नी ॥ प ज अकि न्या ४॥ क मा द र्वा दी नी क र्वा स प न ग र्ज नी क र्वा व ज अकि न्या ४॥ क व
 ग दी ना क र्वा व ज ग र्ज नी ॥ विध्व अकि न्या ४॥ र्वा वी ना दी ना क र्वा विध्व व ज ग र्ज नी व स र्वा साम पि ए न अकि न्या
 दी ना मा ति ज न वाम क न ष र्वा व ज ४॥ य र्वा के पा ला नि महा म लु र्वा द न ष का का र्वा उ र्वा का र्वा ४॥
 र्वा ग क ना र्वा ना मा न नू प व क र्वा य थ क म नी र्वा ग न क र्वा रु निग अ क म यो म र्वा ग य ल्ध र्वा न स र्वा ४॥
 ४॥ को ल ष य म द ठी य म द र्वा य म द र्वा य म म थ ना मा न र्वा म र्वा ४॥ स र्वा न व द वी व र्वा स र्वा न व ग वी ना
 र्वा र्वा दि र्वा वी ना ग न्ध म र्वा न स र्वा न र्वा न स र्वा क ना ४॥ अ र्वा व धी मा ४॥ क पा र्वा र्वा ग र्वा म लु र्वा अ

लीटसु ४ षष्ठु मपि कूटागमनामांकात् षष्ठु कादियष्टुनिकषा लानि विष्वा कस्यै निःजा किन्या दया
यममधनी पर्यन्ता ४ विष्वा कस्यै सुर्वषु लिना ४ स्वकुवर्हि नापि भवसु ० निपजा नर्न देवगायम्भा
नृवत्तद्याद्युवर्मवसनाद्यनयक्षपवीगागलावतीविशाक्षमलुमा ला ४ कषु जगमू किटि नोदवामुः
नेमा मू कू कू कू नलागलावतमि शु क म लु मा ला ४ द्वावत्वादिभदपि देवगादि शुजायिनर्तकव
कावजमा ला कलतायाय निरुगपश्चकषा ला ४ कयत्तद्यर्घ्यादि हिर्मलुगा ४ यक्ष मू दिव्यः स्वकुवर्हि न
४ पदष मू दिनामल्यद्वेवद्विष्ववजा कजगमू कूटा ४ स्वस्ववकमाहिमूवा ४ यदुर्मि भदश्चामधवः

कृष्णमूर्त्यासु पञ्चकुवर्णिनः ४ काकास्थदयः ४ वीनांसु स्वयं कृष्णमूर्त्वाः ४ उवमयमकः ४ यजः ४ य
द्रकुवर्णिनीयातीरुववमः ०० निविनिषागुः ॥ द्वितीयपत्रः ४ ॥ नतयजदयः ५ पिहाननकावृद्धजकध
नयामां तुलया ४ वसिंहा विवन्नजकसु-मां तुलया ४ वृद्धवमयविः ५ यजजकसु-मां तुलया ४ मयनाः
पनिः ५ वृद्धजकसु-मां तुलया ४ वृद्धमूर्त्वा रुनाः ४ वृद्धजकसु-मां तुलया ४ वृद्धगनूतवा रुनाः ४ ॥ नतयज
कादयावृद्धपयः ४ काकास्थदयाः ४ द्विदिक्पालयातीरुः ०० निरुनीयपत्रः ४ ॥ यजः ४ यजः
नववृद्धनजकादीनामकमूर्त्वावृद्धजकसु-मां तुलया ४ द्विदिक्पालयातीरुः ४ ॥ यजः ४ यजः

वतुमस्वदादधुजलादिकं अष्टमस्वधाउम उजलादिकं वषयन्ति नैरुगगुन्ठविस्तु नयासनाः
कानिर्गं कृतीमामुषद्वकवर्हिनः ४ स्वसमउलया नां वज्जकमुपचरवकवर्हिनानि स्यान् नजक
४ काकास्यादिनां विश्वदोकध्याह्ननजकं न्तिकमिगद्वी जानिह्ननजकादीनां यथा कर्म ॥ वं ऊं आं
ऊं हूं खूं ॥ दयमन्तामु ॥ उं श्रीं मरुसूखवज्जसूखजे किनी जालसम्बनं हूं आ ४ हूं हूं हूं हूं ॥ उं श्रीं
वज्जकक अततत ऊं आ ४ जकिनी जालसम्बनं हूं हूं हूं हूं ॥ उं श्रीं वज्जकक ऊं आ ४ हूं जकिनी जाल
सम्बनं हूं हूं हूं हूं ॥ उं श्रीं यद्रजक ऊं आ ४ हूं जकिनी जालसम्बनं हूं हूं हूं हूं ॥ उं श्रीं वज्जकक

[illegible]

[illegible]

नादिवत्तयेऽयन्निर्गमं मूलाकूटागारं नदध्वं वा घ्रातुं नदध्वं चिरमलुतं नदध्वं मूलास्त्ववध्वं नदध्वं रूगाव
 गारुविषयं रूगीयराजकाकनिकाकगस्यामपर्ययनिस्तिगंधदसूर्यनादकाताग्निमलुतापर्यलानानम
 न्दददयावालीरननरुनरुगवान्कावचकुः कृष्णमन्यध्वं च विध्वं वज्रमलुतं गजदामकूटीमकूटाव
 जमनिवज्रकुलुतवज्रकलि कावज्रवचकवज्रमवनावज्रनूपनवज्रपदवज्रमातामृतद्याधुवर्मास्व
 धनीदादगननगंधगुर्मखः ननु मत्तमूर्खं कृष्णं दष्टुकनालागुं दक्षिणं न कं सनागं पश्चिमं पीनं समाधिर्हं वा
 मं गंधं नीलवकसीनमध्यस्थवामावस्तुयः कथं ॥ इति त्रिग्रीवारगवान्दक्षिणस्कन्धपथमानीत्

[illegible][illegible]

वेधावनवनासुर्गवजागृष्टः उरुवद्वानस्यनयवजासमनरुडवनावजयातिनारिगिगा। लोकव्यव
 श्मिगारनिरेणवसवजातिभिर्गणविदिग्धः। नर्यासुर्गवजगाववसर्वेनिवचनविष्कम्भिसामोपना।
 नमस्त्यनमवजायातुवलोकाव्यनोतिजिगा। वाययौगन्धवजातावनवस्वगर्हातिजिगा। वेधान्योन्य २१
 वजामामकीवाकिगिगर्ह्योर्लिंगिगा। अगामीयसिद्धादयस्तथागतोवाधिसत्वाव्यवजासनस्तु४गाबादे
 य४पञ्चासनस्तु४। पूर्वद्वानेतिवतकुलः। श्रीयसिद्धिवनस्तुस्तुकीसमाश्रितस्तु४। साकुलावनवदकिंलज्ज
 रुकावलेनवनमामकीसमापन४। साकुमामकीसमापयिष्यमस्तुकीवेत्यवनवदनिवतारिगिग४सा

तुगावव। उरुवमानकाश्मिगायनिवजस्तुकीसमाश्रितगिग४। साकुपातुनासमा। किंलेनकाध्यासीत्स्तु४
 काधदयस्तुपलासीदा४। अगृयर्पदवगानासासनै। अगपश्वसूर्यस्तु४। मुदवतानोचकाकषवन्दुमलुता
 नि। अथवाकृष्टः। अगहविगाभ्यन्तस्तुचकपीगा४। समनरुड४। अदवजाभ्यसूर्यमलुलस्तु४। यौकिस्तुकी
 विमत्तपुश्या। अरुयगस्तुनयादवता। अगनेसापुधानत्वावेकभाहिमस्वीनगुगर्तीगस्तु४। द्वाक्षेय
 मुदवीचक्षुश्चर्ममर्षादिकववकुयित्वापचरविंभगात्मकविरुमलुलैरवागुगनापाविष्टोपिरु
 गवानरुगदमीगोसमाजवन्। अदेकायीपूर्वस्त्रीवामस्तुगाननस्तुस्तुमस्तुवामगन्धकृष्टगन्धर्गः

खरुकासयससयमातानीलागुहोगकसममातादजिनस्यंध्रयानकाधूपकटकुहकादीपात्रकादी
 ययष्टिधनोपधिमार्गोलाभ्यपीनापीगमकटकुहमहासापीनापीगहोवेध्रादिलीउरुवस्यममृगाः
 नेवघापननामधयासिनासिगरुतरुकाहलाकनामृगरुतरुघननामधयापियूषपर्कपात्ररुका
 सव्वीसुववदीषसंख्याविविधध्वनिः॥पूजाद्वयः॥पर्वनावलस्यपूजाद्वीरुननृखानीतानृखारिनय २२
 गृहीगवमुदजिनस्यकामात्रकापत्ररुकापधिमस्यवायापीनापनहावादयनीउरुवस्यगीगाभी
 नावजध्वनिः॥अयममृगादीनीन्वास्त्रिषकपटलगीकाक्रमनयसूक्तसाधनपठलगीकार्योउरु

वस्यवायानृखारकागीगाकामाअध्वनेवघाअमृगरुलिति।गगपिठकपटलाकन्याभनुववदि
 गद्यरुदनकलुगनयाजनयाअन्यधपर्वीयनविनाधः॥सादिगि।पुनाद्यादभदयः॥पद्मासनरु॥४॥
 ॥वाद्यलुतदिशुअशुनिनकानिकोलेषुशुकानि।गषमगिनविनहिनेषुविभाषपदनरुगादय
 ॥गगुनकयनापनिरुगपुर्वीकिस्यकर्तुकार्यावर्षिकारुषिनेनेकवकासयाखिकरुगिभूतवामा
 र्णकपातवद्यजेविगनी०२॥जातिजिगापुर्वीयसूदतषूहीमाउगुकातदंशुकतदनतमखावायवगप
 वलुनीजात्रीरुतनासा॥गगुगपतिरुगागनयाऊखववठकवेषूवीरुष।सयथाध्वकगदावामथा

४५ अथ चरुं कृत्वा तिष्ठति नादत्तं पृथीमाया कीर्तिं तस्मै विजया श्रीरयनि श्रीवकीव मरुषा पत्रिया मय
पद्मस्य कर्तुं कार्या वा नाहीन का मूलमुखी सुवर्ण दंतु स्वर्णौ वामया ४ मृद्वत्तु रूतक नडा तिमि नादत्त कक्षा
कातना गीय कृपि न वदना का तजि क्का कना साधा ता विनूपा ४ मयू ना पत्रि न अस्या द्रस्य कर्तुं कार्या कीमा
नी नक्षत्रं वामासी (सुवर्ण ४ मृद्वत्तु रूतक नडा तिमि नादत्त कक्षा कमा नी मृग २२
पनिगमना नक्षत्रमाता सुनगा की नारुदा च ॥ ने ना वत्ता पत्रि पश्चिम पद्मस्य पृष्ठ नक्षत्रे डी य ना सुवर्ण वज्रवाः
लो वामया र्धं वा यो ने म ह्यति जि नादत्तं पृथ्वी ग र्ग विजय गण कलक वगी उर्वमी विवृतखा नक्षत्र ॥ २२ ॥

गावावाहं सायविवायवाकस्यवने कवक नीपी गात्र गुर्वकुसुमयाः पद्मं वक्रदलुं ध्वजामयाः क्लीया
गुर्वविष्णुना समापनादतस्य सावित्री पद्मना जलदवनी वद्धि द्विगीध्वनी गायत्री विष्णुस्मृतिं ध्यात्वा दद्यात्
यत्कुरुते नो नरुहस्य कविकाया नो दीपुया सुवया मिमूल उमरु वामयाः खद्रांगस्य यिमा मिष्टाः दलस्य मे
नीर्गंगा निष्ठा त्वाना नाना तस्य लपिकला कुरुवामि हार्ये मना कस्य कविकाया तन्मीः मुक्ता सुव
याः पद्मा कस्य वामयाः पद्मवले कार्लिकया लिङ्गिना दलस्य ग्रीष्मगात्र उल्लेखा मम धलवदना रसवः
कुम्भुति मधय ममा गावा वले नया विमल मम धवाव जगा मध्विकाया द्वासफनि दद्यात् ध्वगुर्मुक्ता मि नयाः

अगदसदशाततिगयदसु॥ सुसनायिकागुत्यावर्तुदिरि॥ सुसनायिकायश्चरु॥ नायिकाशेविमरवपः
 दसु॥ चक्रंमंगारिबहुरिवातिंगिगविमरवयदसु॥ अनलायकासुदरिमखा॥ कायमलुतयदिकासु
 दादभापझानिबुद्धसूर्यबहिनानिगुगदिकयझानिबकानिकोवसुनि॥ धनानि॥ यत्तुदतानिपुथम
 पविमलुत॥ वसाविद्वनीयः॥ हनीयाधुगभगवदह॥ पविमलुतपुष्टवगदलात्यरुमिदक्रिवावः २४
 हनयुगियादिनिधिदवीन्यास॥ कर्तिकायाकुपुर्लुमा॥ मावासावनायकलेनरिगा॥ गयपुर्लुमा
 यहाअमावासाहृपाथानेअसादि॥ सुषीश्चनदवगा॥ उकुजा॥ गयपुर्वदावसमथयदलमरुः

युगापविमलुतकलिकायानेमनि॥ रुष॥ सयथा॥ खमकलीवामया॥ रुलकं कयातचकलदनतमख
 नाकसीसमालिङ्गित॥ अस्यवेगुनिथय॥ अलग्नयमृगपविमलुतयपुष्टववाय॥ रुष॥ सयथा॥ कत्य
 रुम॥ पाविजागयष्यक॥ वामयाविद्वनीतात्यरुचप्रवकुलिङ्गित॥ अस्यवेमरुगिथय॥ दक्रिवाव
 नस्यवाममहिषापविमलुतकलिकायांयमानक॥ कोलीसमालिङ्गित॥ सयथा॥ दलुखलावामया॥ मृ
 खलाया॥ अस्यरुलुननिथय॥ सयमहिषापविमलुतकलिकायांअनीनकावद्वल्लिङ्गित॥
 सयथा॥ मकिदलु॥ वामयापमकमलुत॥ अस्यक्षुठनिथय॥ नेअसमयभापविमलुतवाजस्यपुष्टवव

अस्मान्कवर्तुः ॥ अथवा ॥ अकिं कृत्वा मया न तदर्थं ॥ लो लक्ष्मी समापन ॥ अस्मात्तदनिधय ॥ पश्चिमदा
 नस्य वामेर्जायनिपन्नस्य वनदकं कृत्वा ॥ पीन ॥ को र्यो नी समापन ॥ सद्यया मलिन तगदा व (वामया ॥ न क
 लपदा ॥ अस्मात्तदनिधय ॥ सद्यग जायनिपन्नस्य कृत्वा ॥ को र्यो नी समापन ॥ सद्यया र्धज मग्निः
 वालम्ब वामया र्धज धनूषी ॥ अस्मात्तदनिधय ॥ वायव्य रुसाय निपन्न कर्तुं कार्या वृक्ष पी ना विष् २५
 दालिजि न सद्यया ॥ अस्मिन्नका सूर्ये ॥ वामया ॥ पद्म कृत्वा ॥ अस्मात्तदनिधय ॥ उरु न दान स्य वाम
 वृषसाय निपन्नस्य कर्तुं कार्या नूत ॥ गुर्वी ॥ नी समापन ॥ सद्यया ॥ पि ॥ तवा लो ॥ वामया ॥ सूर्यो वेष्टि

न सदा जे धन ॥ अस्मात्तदनिधय ॥ सर्वम कनीय निधन ॥ अस्मात्तदनिधय ॥ को र्यो नी समापन ॥ सद्यया ॥ पद्म
 यया ॥ पा ग न त्व वामया ना ग पा स ॥ अथ का न मलिम्ब वा ना ही समापन ॥ अस्मात्तदनिधय ॥ अने म
 नमूष काय निपन्न कर्तुं कार्या गत्व म ॥ सिन ॥ अथया ॥ पद्म वृक्ष वामया ॥ पा ग न त्व को र्यो नी समा
 पन ॥ अस्मात्तदनिधय ॥ पूर्व दान स्य वामग न ॥ अथ नि क म त कर्तुं कार्या विष् ॥ रुष् ॥
 नी समापन ॥ सद्यया ॥ अथ का न द वामया ॥ पद्म र्ध ॥ अस्मात्तदनिधय ॥ रुद्र व व जा स न स
 लो गो दि निधि दया रति न पदा ॥ अस्मात्तदनिधय ॥ अथ दि र्वि वृक्ष य ध र्ध न ॥ समा स न य ॥ अथ नि

ननुमनुसंभवेनातिगितास्तनपर्वदावसफकृष्णकनेत्रकमानकम्बलथनीतदलुमापसिद्धिवन्
 अननातिगितामाविशीयीमास्येकवालीवकदलेवामाखीभंदववदधनादक्रिलसफनकम्बः
 नकनथटाकिनाजावतभवन्। अननातिकिगावन्नामुकासयाखीमकुनकुनीवामाखीपद्मादतीव
 आत्मापम्बिसफापीनभंगरूपीननथमहावतीववावनवन्। अननातिशिवकर्मवताकृष्णस्य
 र्णमनिकुलिता॥ वामाखीकलभस्यीविजुगीतडरुनसफसंगसिंहसिगननथअवतामिगारवन्।
 अननातिगितासमकिनकसयाखीवालीकुलीवामाखीकादनुयालोदधनावकभस्याधमाकालो

विनगुपथर्वलुगनूनाममनरुनिगनथडकीषवकुवर्णवज्जपालिनिवाससुहागिनीतानीतवर्ण
 सयाखीकालिवकुवामाखीकपालयल्लुदधनावकभस्याधमासागातसुपादसफकृष्णभइतक
 ननथसमनाऊ४समनरुडवन्। अस्यपद्मावोडाकीरुनिगासयाखीपुष्टिभूतवामाखीनाग
 यामंदवकाकविजुगीअगुनीतदलुदिकाधानथपविनिगपप्रसूर्यछातीदसुनायका४सुसुन
 सुहागवकुर्मपम्बकिमात्रीयादयमुपुलातीदसुअनतापिक्का४पनसुनगममागुकाधाः
 न्यस्यकिअगुनथानाकृष्णदिवर्णरवगिकूतवभासुन्दनादानमध्वंरुननपुनियोदिमंग

दनसा नरु कनादीनामपि गाननरु कनाम (अ) वदी सु नु दु र्ध मध र्ध रतिन ॥ गगप र्व दान सवाम
 दक्षिणया वयि मनु तया र्थ सं र्थ य द क क र्ठ का क र्ठे (अ) ना सा का का र्था लिङ्गि नो (द) र्ति व दान स
 वक्षि मनु र्थ यो र्थि सु कि र्ण र्थ पा लो न के सु कना सा गृध्रा सा समा य र्थे (प) र्थि म दान स ए (थी) मनु र्थ यो र्थ
 रु क म र्थ य दान पी गो रु म् का सा र्थि र्थे (उ) रु न दान स रु त मनु र्थ यो न रु क र्ति को मु र्थे (अ) धा सा उरु २१
 का सा र्थि र्थि गो (उ) र्थ का लो म न्म मनु र्थ यो रु नि गो नी ता र्थि र्थि न ॥ अध ४ या गा लो म न्म मनु र्थ वि रु था
 नी र्थ व जा र्थी समा य न ॥ स र्थे ना ग व जा स न रु र्ध गु र्थ जा ॥ स र्था र्थि म न्म न्म र्थ र्थ व र्थ व (वा) मा र्थि य न न

त्रि वि आ लो (अ) र्थ व र्थ वि दि र्थे (अ) न्म म न्म र्थ र्थि म न्म मनु र्थ ने अ सा म रु ग रु न स र्थ ॥ अ गि वा य व
 त्र य पा म (अ) मा लो म न्म न स रु न व का सि दि रु न क नि वि दि रु नि गो नि ग र्थ र्थ व रु (अ) ना सा रु र्थ द र्ति
 लो रु क ना सा न का र्थि प र्थि म रु म् का सा पी गो उ रु न या सा सि गो अ रु न या दि रु का का सा गृध्रा सा ग न रु
 सा उ रु का सा ॥ रु र्थ व रु पी ग र्थि गो ॥ उ रु का लो न र्थ नी त व रु (अ) न र्थ (अ) नि नी ता या ॥ अध ४ या गा लो
 न र्थ व जा र्थी रु नि गो (अ) सा न र्थ य र्थ नो द र्थ ॥ व गो ॥ (अ) ना सा द या मनु र्थ य द न र्थि गो ॥ पा गु क र्थ
 आ दि रु नि र्थि गो ॥ रु क र्थ क पा ल रु न स र्थ ग न क न द या मि न गो न ग न ॥ प र्थ म र्थि र्थ ग ला व र्थ र्थि ग

नि। पुगवसर्वमवस्यमस्यपगनवमन्यथावदुत्थाकषर्दिगदिक्कल्यादिवाञ्जनापनस्यवतिमोधः ४ स्यात्
 आसामिक्कनांनिवर्त्तनस्यनूपायुगीक्कषर्दिगकायमलुत्तवकीषपर्ववगस्वकूलवमास्वस्वदिरुचर्कमी
 दिगथागनस्याऽन्याः ४ सुवोदवगाविविगुनत्तमकूटिन्यः ४ ॥ ०० ॥ रुयदारुगवानकात्तवकावजसत्तस्वरावा
 यवस्वप्राग्नदार्हनिगस्वर्गुकास्वनमूदिगध्वनीविध्वमागायदात्तश्रीस्वस्वरावर्तनीताश्रीस्वमत्स्या १००
 वजसस्वनः १०० विध्वमागावजध्वनीस्वरावाः १०० दिहानविहानयाः ४ यवमूदलम्बवनिगानः ३०० वि
 मत्तपरायाः १०० यवमजिनपनिहानम्बुवीविध्वमागास्वनध्वनिविकहानमाकागध्वनिविनिः ॥ अथस्वनमः

न्य ना क नू ने क न सा ऊ न म हा सू ख ह न न य हा रु का न व का वि ह न र्क ध रु दा वि ध मा ना आ का म धा रु व ऊ
धा ~~नी~~ ध नी ख रु व रु थ ४५ अ न नु वा कं ग अ लि जि ना व ऊ धा ख म्भ र्था वि ध मा न नि व ऊ धा त्वी ध्व नी सा र्ध
वि ह न ग र्ग य ध म हा सू ख ० ति ग अ मा द्य सि धि न त्व म वे ला व ना मि ना रु रु नि ना का ख ल म दि ना ४॥ अ थ
वा अ मा द्य सि धि न त्व ग न न त्व र्ग रु वा श मि ना रु न सू वे ना व न न सी १ को ख ल रु नि न न सम न रु द ४ ग द
व ऊ सू रु ना ऊ १ मि नी ला नी ला नू दा ऊ रु ला वि ऊ य ना ग म्भ नी ला का ख म्भ ला वि ऊ स त्व न मू दि ना ४ व ऊ
पा नि ह म्भ धा रु व ऊ उ ष्य ष व की नो दा ऊ वि ष्य मी ऊ य ना ग म्भ रु नि ना का ख ल ॥ अ य ना रु द व ना ४ रु

सुभाषसिद्धिना॥ न कवत्संरुचन। पीगावेनोवनना। ध्वनामिताकन। ७१ ॥ ६४ ॥ सुदिन ४८० ॥
 ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥
 ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥
 ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

[illegible]

अथामुसम्बुगुहसफपक्रममार्गः।सः

202

262

२३। नमो। एगजकममममूनियतथागजायमूहनेसमकावृजाय। तद्यथा। उंमूनरमममूनियस्वाहा
सर्वस्वानदहिमस्वरगगनराक्षसां चक्रेकनूक्षामूनित्वनंदवदविधीलक्ष्मिणुस्वामिसहस्रगतिनाथयुगु

आश्विन

262

भद्रा संज्ञाः

॥ ग्रहका जाते ॥

नंदन च भद्रा च जया च रिक्ता पूर्येति सर्वास्तिथयः क्रमात्सुः ॥ कनिष्ठ मध्ये फलाश्रु
कले कृष्णो भवत्युत्तम मध्यमो मध्यमः ॥ बालसो जीव शुक्रो च क्षत्रियो भौम मास्करी ॥
स्वम सोम्यो वैशो प्रोक्तो राहु मंदो तथांत्यजो ॥ ॥ ग्रहका वरा ॥ रक्ता वंगारका
दित्यो श्वेतो शुक्र निशाकरो ॥ गुरु सोम्यो पीत वरुणो शनि राहु सितो शुभो ॥
चंद्रमा संज्ञांति वरा फला ॥ ॥ मेधा त्विक के च तथैव रक्तं चाप्येव मीने च तुल्ये पीतं सु
श्वेतं द्रव्ये स्त्री मेधुने च चंद्रे कृष्णं च मर्कटे घटे च सिंहं ॥ रक्ते फले भवेदुःखं श्वेतं च
कलसं सुभम् ॥ यदि श्रीरुतथा प्रोक्ता इषामे मृत्युने संशयः ॥

Handwritten text in Devanagari script on a small, rectangular piece of aged paper. The text is arranged in two lines, with some characters appearing to be in a different script or heavily stylized. The paper is yellowed and shows signs of wear.

५

Handwritten text in Devanagari script on a larger, rectangular piece of aged paper. The text is arranged in five lines, with some characters appearing to be in a different script or heavily stylized. The paper is yellowed and shows signs of wear.

५

संज्ञा संकेत

262